॥ कविवचनसुधा ॥

जिसको

श्रीयुत ठाकुर महेश्वरबक्ससिंह तालुके-
दार रामपुर मथुरा जिला सीतापुर
की आज्ञानुसार बाबू रामकृष्ण वर्म्मा
ने कविताप्रेमी महाशयों के
चित्तविनोदार्थ निज



॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित किया ।

१९०६ ई० ।

॥ श्रीः ॥

कविवचनसुधा ।

दोहा ।

श्री गुरुचरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि ।
बरणौं रघुपति बिसद जस जो दायकफलचारि ॥

सवैया ।

अवधेश के द्वार सकार गई सुत गोद मैं भूपति लै निकसे ।
अवलोकि हौं सोच विमोचन सो ठगि सी रही जे न ठगे धिक से ॥
तुलसी मनरञ्जन रञ्जित अंजन नैन सुखञ्जन जाति कसे ।
सजनी शशि तै सम शील उभै नवनील सरोरुह से बिकसे ॥२॥

कवित्त ।

भूषित विभूति सिद्धि सम्पति प्रसूति सितकण्ठ उपवीत सेष सेखर शरीर है । कालहू के काल पै कृपाल सदा दासन पै उदित उदारता हमेस हुलसी रहै ॥ औध चचरीक चित पुंडरीक पायन पै नित गुनगायन का रसना रसी रहै । मंदाकिनी मालि अंक मण्डित मृणाली मंजु मूरति महेश मेरे मानस बसी रहै ॥ ३ ॥

सुमनोज मये उनये घन मै दमकैं दशहूं दिशि दामिनिया ।
फहराय फुही रस मैं बरसैं जगी जुगनू जोतिन जामिनिया ॥
महिपाल जू तैसेही सीरी समीर सुगन्धित मन्द ह्वै गामिनियां ।
अस पावस अंक पियाके अली बनि सोई भली विधि भामि-
नियां ॥ ४ ॥

बन बागन में पपिहा करि कूक अचूक ह्वै बान से मेरत ये।
महिपाल मनोज मनोजमई जुत जूगुनु जामिनि हेरत ये॥
कुल साज के साजन को सजिये त्याहि ते बाजि कै मन फेरत ये।
घनघोर घटा घुमड़ाय अरी घहराय घरी घरी घेरत ये॥ ५॥

चन्दमुख चमक चहूघा चौक चैातरा के बाहिरै लौं बगर मरीची भाति भालिकै। कोमल कपोल पै डगर भृकुटी की कोर बलित बिराजी लट तार सी बिछलि कै॥ कबि लछिराम स्याम सुन्दर सराहौ किमि समगन साज मै रही हौ कर मलि कै। कामधनु कगर कनक दरपर मानों लोटति लपटि लोल पन्नगी मचलि कै॥ ६॥

आरसबलित बैठी सुमन की सेज पर प्यारी परभात नील नेह सरसन तै। मरगजी कचुकी सुरङ्ग पट स्वेदकन तैसे बर बदन बिराजै बुन्द बन तै॥ कर के सँभारन में सीसफूल फैल्यो खुलि पांखुरी बिराजै लछिराम या समन तै। मोर काम कमल जुगल जोरि मानो मनि चूर कै बगरि गई कालीनाग फन तै॥ ७॥

कुललाज जँजीरन सों जकरचो जुलमी तऊ उधम ठानत है।
तन मैन महावत ऐड़के आंकुस ताहू की आनि न आनत है॥
झुकि झूमि झुकै उझकै न रुकै परमेस जू जोग न जानत है।
पिय रावरो रूप बिलोकै बिना मन मेरो मतङ्ग न मानत है॥८॥

मदन-मसाल कैधौ चम्पकली-माल कैधौ भानु की प्रभा है कैधौं सोहै छबिजाल सी। रति अंस सार कैधौ मैन कामनारि कैधौं सम्पावन क्रान्ति कैधौं चित्त हरि आलसी॥ रमाकर सूल

कैधौ गिरा हरमूल कैधौ शिवा शशिगार कैधौं भव बृज जाल सी। ऐसी बाल लाल कैधौं लाल लाल लाल कैधौ राधिका विसाल कैधौ हरि-हियमाल सी ॥ ९ ॥

चन्दन चरचि चारु मोतिन को उर चारु चली अभिचारु गति मायल मराल सी। केसरि रँग्या दूकुल हांसी में झरत फूल सौतिन करत सूल अली चन्द बाल सी ॥ गहगही चांदनी उठत महमही अङ्ग लहलही ललित लता है छबि जाल सी। घूँघुट उठाये चहुँओरन उजास होत जात शिवनाथ कैधौं मदन मसाल सी ॥ १० ॥

सवैया ।

बेली घनी घर के ढिग मैं अलबेली करै नित जाइ बिहारन ।
सासु औ नन्द सबै सुख देत हैं भूषित है उर हीर के हारन ॥
कन्त न होत रुसन्त कबौं कविबंस भरो गृह दूध भँडारन ।
आजुहि कोकिल कैरव बोलत प्यारीके पीरी परी केहि कारन ॥
देखुरी देखु या ग्वालि गवांरिन नैको नहीं थिरता गहती है ।
आनन्द सी रघुनाथ पगी पगी रङ्गन सी फिरते रहती है ॥
कान सों कान तरचोना सु छ्वै करि ऐसी कछू छबिको गहती है ।
जोबन आइबे की महिमा अंखियां मनो कानन सों कहती है ॥

॥ दोहा ॥

कनकलता श्रीफलफरी, रही बिजनबन फूलि ।
ताहि तजत क्यों बावरे, सुअलि सांवरे भूलि ॥

कवित्त।

राधे को रसाल रूप कहां लौ बखान करौं हरिद्याल उपमा बिसाल सुखकन्द पर। नूपुर बजत पग भूपुर धरत गति गुजनकी भौर कैसी मंजु अरबिन्द पर॥ बिम्ब से प्रवाल से गुलाल से अधर पर झूमि रह्यो झूमका मयूर ज्यों अनन्द पर। गुदे लाल तार से सेवार से सरस बार फूलि रह्यो मानों इश्कपेंचा चारु चन्द पर॥ १४॥

मरकत सूत कैधौं पन्नगी के पूत कैधौं राजत अभूत तमराज के से तार हैं। मकतूल गुनग्राम सोभित सरस स्याम काम मृग कानन कै कुहू के कुमार हैं॥ कोप के किरनि कै जलज नलिनी के जन्तु उपमा अनन्त चारु चवर सिंगार हैं। कारे सटकारे भींजे सोधसे सुगन्ध बास ऐसे बलभद्र नव बार तेरे बार है॥ १५॥

सुजनी चिकन की बिछाये डोरी लाललाल ताकी मखमल की सी सोभा दरबार है। तिरछी चितौनि येती उदबेगी दौरिजात बारुनी दुरा न आगे खड़े चोबदार है॥ बकसी देवान दुओ कोय लागे कानन सों अंजन के दसखत सिद्ध कारबार हैं। लाज औ मनोज ये हुजूर के खवास खास नागरि के नैन कै नबाब नामदार हैं॥ १६॥

कमल पै चम्पकली तापै मुकता की फली तापै कदली के खम्भ तापै हेम भृङ्गी बर। तापै भरो पानिप सरोवर लहरि लेत तापै एक कचनार दोय कली सोने कर॥ तापै हेमसाखा दोय पल्लव प्रवाल कीन्हे तापर कनक कम्बु तापर रसाल फर।

तापै बिम्ब तापै कीर तापै अरबिन्द धनु तापै इन्दु तापै घन तापै सात्विकी डगर ॥ १७ ॥

कुन्द की कली सी दन्तपंक्ति कौमुदी सी बिच बिच रेख मीसी की अमी सी सी गटाकि जात। बीसी त्यों रची सी बिरची सी बरछी सी तिरछी सी आंखियां वै सफरी सी त्यों फराकि जात ॥ सर की नदी सी दया मानसिन्धु की सी मनो चक्रित खरी सी रति डरी सी सराकि जात। चौफन्द फँदी सी भौंहैं कसी सी ससी सी दुति जाकी सीसी करिबे मै सुधा सीसी सी ढराकि जात ॥ १८ ॥

नखत से मोती नथबन्दिया जराऊ जरी तरल तरचौननकी आभा मुख फूटी है। देवकीनँदन कहै तैसिये सुचम्पकली पचलरी मंत्र गति मोहनी की लूटी है ॥ चूनरी कुसुम्भी रङ्ग ऊनरी परत तन कलितकिनारी की ललित रस जूटी है। बाल तेरी छाती पै हमेल छबिछूटी मानो लाल दरियाई बीच बेलदारबूटी है ॥१९॥

दीन्हो दई रूप कैधौं याही को सकेलि सब जाकी बेस बातैं बस बाल मै करैया सी। आंख अलबेली की अनोखी अरबिन्द ऐसी बान ऐसी लेखी परि प्रानन हरैया सी ॥ सुकबि निहाल कहै मेनका सुकेसी ऐसी केतिकौ खड़ी है जाके पायन परैया सी। महल महान पर बैठी चारु चन्द्रमा सी वाके आसपास और तरुनी तरैया सी ॥ २० ॥

सवैया।

आंगन पौरि लौं दौरि गई सुनि बांसुरी की धुनि बाजन लागी।
बेनी अचेत परी जबते तबते बवरी कोइ लाज न लागी ॥

तोरन तौलिबे को तरुनी सुहमें हरिको सखि लाजन लागी ।
काल ही काल दसी सी तिया फिरि आजु वही धुनि बाजन लागी ॥
मनमें थिर ह्वै करि ध्यान सुजानको आमन में तन तूरति री ।
झपकी अखियां न खुले प्रहलाद पिया बतियां न बिसूरति री ॥
मुख चन्दकी खोर चकोरी तिया मनमें अभिलाखन पूरति री ।
बालि हौं तो बुलावति बोलै नहीं वह ह्वै गई सांवरी मूरति री २१

कवित्त ।

कैधौं रतिपति रति गेह के रुचिर खम्भ अमल अनूप रूप हरै रूपजात के । रतिके अरम्भ पिय भुजपरिरम्भन को सुखद सवारे बिधि बुधि अवदात के ॥ कलानिधि बनक कनक कदलीन हूं के हीन करि कलभ मलीन गति मात के । जघन सघन वोट आवरनहूं की मन मुनि बस करन हरन युधि सात के ॥ २३ ॥

सोहैं मेचमाले से तमाल दुति काले अति अमित कसाले पले तेरे ढिग चाले रीं । लखिये खुसाल हाले २ पति माले कोले करि के अचाले नाहिं लाले सो ये जाले री ॥ बहुत रसाले बनमाले गले डाले हले चित अन्तराले कंज फाले सो हटा ले री । भाल की सी नाले कंजकेतू सी बचाले बृजवाले नन्दलाले को हियाले में लगा ले री ॥ २४ ॥

ऐसे बान मैन के न देखे एनमैन के जगैया रैन सैन के जितैया सौति सीन के । कमल कुलीनन के संकुली करनहार कानन लौ कोयन के लोयन रँगीन के ॥ भनत कबिन्द्र भावती के नैन जावक

सो पेखे प्रेम पायक सो नायक नवीन के । सांचे सो अमीन के अमीन मानो मीन के सराहै को खगींन के मृगीन पन्नगीन के ॥२५॥

जैसे खरे कुन्द से सगे से रसबुन्द के पगे से रतिद्वन्दके जगे से कुंजतार के । मालती मुकुर मोतिया के माल मुरि जात दुरिजात चौका पै चमेली सुकुमार के ॥ दन्तपंक्ति प्यारी की बिसाल कबि हरदयाल उपमा रसाल न मराल भषुहार के । साचे सो अनार के अनार मानो मारके सराहे कौन चार के रसाल बिज्जुसार के २६

तमतम तामस रसादिपति तोयद सी नीलकजटन पै सुजट प्रजुटी सी है। जनपति कन्दरप दीपतिछटा सी छांह हाटक फटिक ओप चटक मटी सी है ॥ कचकुच दुबिच बिचित्र कृतवत बक्र छूटी लट घट पटतट लपटीं सी है । बिरह असुभ्रपन्न ती-तन प्रदोष पाथ पन्नगी पिनाकी पग पूजि पलटी सी है ॥ २७ ॥

जाको जो स्वभाव सो तो टरत न सौ उपाउ तिल पाचि ताउ जोपै निपटि अपान है । लालकी कुचालि चालि हौ छिपाय हर-धाल और ब्रलबाल तो बजावती निसान है ॥ कित हित बातन में हित बचनाय धाय राखत सयान जौ न भाषत निदान है । मौलिसिरी माधवी औ मालती मधूकन पै ठोकत फिरत सो मधूक रसमान है ॥ २८ ॥

सवैया ।

कंज से सम्पुट सोहैं खडे गड़ि जात हिये जनु कुन्त की कोर हैं ।
मेरु हैं पै हरि हाथ में आवन्न चक्रवती पै बडेई कठोर है ॥

भावती तेरे उरोजन मैं गुन दास लखै कछु औरही ओर हैं ।
शम्भु हैं पै उपजावैं मनोज सु बृत्त हैं पै परचित्त के चोर है २९

कवित्त ।

लागी डीठि लगन लजान लागी लोगन को लंक लागी लचन लोमान लागे पजनेख । चम्पक प्रसून दुति कज कलिका से गात और औरै रङ्गन सु अङ्गन परत देख ॥ कसमसे कसे उर उकसे उरोजन पै उपटत कंचुकी की तुरुप तिरीछी तेख । उदया सु अस्ताचल दूनो कोर दाबि मानो दीपति नवीन पथ रविरथ चक्र-रेख ॥ ३० ॥

ठाढी खराड तीसरे रँगीली रङ्गरावटी में ताकी छबि ताकि छकि रह्यो नँदनन्द है । कालिदास बीचिन मैं सोभा की दरीचीन मैं इन्दु की मरीचीन मैं झलक अमन्द है ॥ लोग लखि मरमैं कहा धौं यहि घर मैं सुजगमगे रगमगे जोतिन की कन्द है । लालन की माल है कि मालन की जाल है कि चामीकर चपला कि रवि है कि चन्द है ॥ ३१ ॥

कैधौ सिसुताई के सम्याने ताने सुन्दर ये कैधौं सुघराई पट कूट कि है लाज की । कोकसाल कोक है कि कानन के गुम्मज कि बलिभद्र कोमल कुलह काम बाज की ॥ मोहनी की जाल कि उचाल इमि कुम्भन की डारी है अँवारी कै जवन गजराज की । गोरे गोरे गोल कुच तेरे नील किंचुकी कि पहिरे सनाह रतिरन के समाज की ॥ ३२ ॥

जावक सुरङ्ग मैं न ईङ्गुर के रङ्ग मै न इन्दुबधू अङ्ग में न रङ्गऔनि बाल मै। बिम्बफल बिद्रुम बिलोके बहु भांतिन के बिलै जात एमी छुबि बन्धुज बिसाल मै॥ कहै कबिगङ्ग लाखि ललना अधर लाली लाल वारि डारौ लाख भांति रङ्ग लाल मैं। किंसुक रसाल मै न कुसुम की माल मे न गुंजन गुलाल मै न गुललाला लाल मै॥ ३३॥

मखमलतलपग पलपल सोभ बढ़ै केदली से खम्भ जंघ अमल सुहावतो। केहरि के लंकहि कलक कटि देनहार छबि भौर निन्दक मन्दाकनाफ भावतो॥ त्रिबलीरु कचकुच ग्रीव चिबुका अधर रद नासा नैन मोचि उपमा न पावतो। नीलपट मध्य यों मुखारबिन्द भ्राजमान इन्दु ज्यों सघन घन टारि छबि पावतो॥ ३४॥

ग्रीषम दुपहरी मे प्यारी परजंक पर सोवत निसंक छबि छाई स्वेदकन की। कंचुकी अरुण छूटी अलकै कपोलन पे सोहै उर माल पै मराल के भखन की॥ गह भुज बाम के उठाय मुख चूमि लियो जागि परी औचक अनूप यों लखन की। लूटत लोनाई बड़भागन सो पाई छबि देखे बनि आई अरुनाई या चखन की ३५

सवैया।

एक समै मनमोहनजू साजि बीन बजावत बैन रसालहिं।
चित्त गयो चलि मोहन को बृखभानसुता उर मोति के मालहिं॥
सो छबि ब्रह्मा लपेटत यों कर लैकर सोकर कज सी नालहिं।
ईश के सीस कुसुंभ के पुञ्ज मनो पहिरावत व्यालिनी व्यालहिं ३६
गङ्ग नहीं मुकता भरी माग है सेस नहीं उर बेनी बिसाल है।

भूति नही मलयागिरि सोभित चन्द नहीं यह उद्दित भाल है ॥
ली* नहीं मकतूल को पुञ्ज है ध्यान नहीं बिन लाल बेहाल है ।
काम महीप सँभारि के बाँधिये शम्भु नहीं यह कोमल बाल है ३७
सीसी गुलाबके नावत सीस लगावत चन्दन घोरि कै गातन ।
तापर बैठी अटा पर जाइ कैं चादनी फैलि रही हिमि रातन ॥
डालत हैं कासमीरी समीर उसीर के नीर के चौर हैं गातन ।
बर्फ के बुन्द परै तन पै पै तऊ बिरहानल आगि बुझात न ३८

कवित्त ।

मीन से बिछूलता कठोर है सुकच्छप से हिये घाव करै को बराह से उदार है । बिरह बिदारिबे को प्रबल नृसिंह जू से बावन से छली दोऊ तनमन हार हैं ॥ द्विज से अजीत अरु बीर रघुबीर ऐसे कृष्ण से दयाल सुखदेव या बिचार हैं । मौनता ते बांध काम-भरे ते कलकी कहे प्यारीके पयोधर कै दसौ अवतार है ३९

सवैया ।

रूप अनूप बनी सखियां जु सुता बृखभान की पान सी भूपर ।
पूरण भाग महा अनुराग से वारौं कहा इन मोहनी जू पर ॥
रीझि रँग्यो अचरा कुसुमी सुभ बोलत बात लगे कुच दूपर ।
लाल ध्वजा मकरध्वज की फहरात मनो गजकुम्भन ऊपर ४०
पौढ़ी हुती पलका पर बाल खुल्यो अचरा नहिं जानत कोऊ ।
ऊचे उरोज की कचुकी ऊपर लाल लसे चरिचा ढिग सोऊ ॥
सो छबि मोहन दोखि छक्यो कवि ताष कैहै उपमा लखि ओऊ ।
मानो मढे सुलतानी बनात सों मैन महीप के गुम्मज दोऊ ४१

कवित्त।

मोहन को मन तेरे हाथही लगोई रहै अंक उरझानी रम-बेलि सरसत है। कोकनद नाल दोऊ रूपक सरोवर मे दाखि दाखि सौतिन को मन तरसत है॥ भरमी सुकवि यत्र बिधिनै बनाय राखी ब्याकुल सुचेत होत नेक परसत है। बाहु की डुलन मांह डोलै मन मुनिन के जग बस कर तेरे भुज दरसत हैं॥ ४२॥

कैधौ युगजंघन के थम्भन के खम्भ कैधौ ऊपर उलंघन के सिढ़ी जुग फारे है। कैधौ रूरेजा बांधि नेजन से निकसि आगे जाहिर करत जीति रति के मिनारे हैं॥ भौन कवि कहै ऐसे आसे बरदार कैधौ आसे द्वै निकासे खास हुकुम बिचार है। जुरवा जलूम तोन उरवा परत काम कुरवा करत मंजु मुरवा तिहार है॥ ४३॥

सुंदर बदन राधे सोभा को सदन तेरो बदन बनायो चार-बदन बनाय कै। ताकी रुचि लेन को उदित भयो रैनपति राख्यो मतिमूढ निज कर बगराय कै॥ कहै कवि चिन्तामणि ताहि निसि चोर जानि दियो है सजाइ पाकसासन रिसाय कै। यातें निसि फेरचो अमरावती के आस पास मुख में कलंक मिस कारिख लगाय कै॥ ४४॥

कहां मृदु हांस कहां सुखद सुबास कहां निन को उजास कहां सबही को मोहनो। कहा मृदु बैन पुनि कहा ये लजीले नैन कहां नेह भरी सैन कहां मुरि जोहनो॥ छबि की निकाई और जोबन जुन्हाई कहां उपमा लजाई जैसे मनि कोड़ी पोहनो।

आनद को कन्द जिन मोहे नंद नन्दन को कहां चन्द मन्द कहां तेरो मुख सोहनो ॥ ४५ ॥

भाग भरे आनन अनूप दाग सीतला के देव अनुराग झिझिया से झमकत हैं। नजरि निगोड़िन को गड़ि गड़ि गंड पर आड़े करि पै न डीठि लोभ लपकत है॥ जोबन कि मान मुख खेत रूप बीज बोयो बीज भरे बूदन अमन्द दमकत है। बदन के बैझे पै मदन कामनैनी के चुटारे सर चोटन चटा से चमकत है ॥ ४६ ॥

बदन सुराही में छबीली छबि छाक्यो मद अभर पियाले छिन छिन में गहत हैं। अलसाय पौढ़त कपोल परजक पर कबहूं गजक जानि चखन चहत है॥ प्रेमनग साथी ये तो सदा रहै अक भरे छक्योई रहत कोऊ कछू न कहत है। झूकि परै बात के कहत अनखात न्यारो बेसरि को मोती मतवारोई रहत है ॥ ४७ ॥

छाड्यो चल सागर बिधायो तन आप आय अधर के बीच रह्यो औरन चहत हैं। बिधि के बनाउ बस आनि परो बेसरि मैं बन्यो है सँयोग मणि कंचन सहत है ॥ पूरन प्रताप चन्द पायो है मुखारबिन्द येतो कहा लहै कन्त जेतो तू लहत है। प्यारी के बदन पै मदन जू को मद पिये मोती मतवारो सदा झूमत रहत है ॥ ४८ ॥

रतिहू की मति पतिहू की ललचात अति मैनहू के नैन देख लालच भरति हैं। सुन्दर सरस सुभ सौरभ सहज सोहै

करकस जानि करी कर निदरति है ॥ सोभित सुभग कोऊ चोप घन कर तेरे जघन जुगुल मनि कएठ जो हरत है । भाय की उतारी कैधौं सोभा साचे ढारी छबि कनक के कदली की बदली परति है ॥ ५० ॥

कोमलता कंज सों गुलाब सों सुगन्ध लै कै इन्दु सो प्रकाश लीन्हों उदित उजेरो है । रूप रति-आनन सुघातुरी सुजानन में नीर लै निबानन सों कौतुक निवारो है ॥ कहै कवि ठाकुर मसाला बिधि कारीगर रचना निहारि को न होत चित चेरो है । कंजन को रङ्ग लै सवाद लै सुधा को बसुधा को सुख लूटि कै बनायो मुख तेरो है ॥ ५१ ॥

सवैया ।

खजन के दृग के मद गंजन अंजन राजमि ये सरसी ।
आनन की छबि आनन में चतुरानन कानन में जु बसी ॥
जोग करै तिय की उपमा अब को महिमा बरनै बकसी ।
सिन्धु मथ्यो तब चन्द कढ्यो जब चन्द मथ्यो तब तू निकसी॥५२॥
एक समै बलि राधिका कृष्णजू केलि किये जल में सुन पाये ।
चीर में अङ्ग रह्यो लपटाय बढ़ी उपमा छबि देत दिखाये ॥
हरी दरियायी की कंचुकी में कुच की उपमा कबि देत बताये ।
बाज के त्रास मनो चकवा जलजात के पात में गात छिपाये॥५३॥

कवित्त ।

शील की छमा है अनिमा है द्विज दीनन की सुजस नमा

है कै उमा है देन बर की। रच्छक सदा है बज्र बिक्रम अदा है भीम गदा की ददा है सिच्छदा है कवि कर की॥ समर उजा है दुख दोष बिरजा है सदा पूजी जे कुजा है अनुजा है हिमिकर की। धरम धुजा है देन शत्रुन सजा है पुनि पालन प्रजा है द्वै भुजा है रघुबर की॥ ५४॥

मैन चैन भजन कुरङ्ग मद-गंजन परस भौर सजन सलोनई लगत हैं। पानिप के पंजन छबीली छबि छजन जलज जल मजन ते उपमा पगतु है॥ मीन सुत बंजन कपोत कीर कजन कुमागी वृषभान जू की आनन जगतु हैं। वारौ कोटि खजन मुरारि मन रंजन ये तेरे हग अंजन निरजन ठगतु है॥ ५५॥

सवैया।

गुनगाहक सों बिनती इतनी हकनाहक नाहिं ठगावनो है।
यह प्रेम बजार की चादनी चौक में नैन दलाल अँकावनो है॥
गुन ठाकुर ज्योति जवाहिर है परबीनन सो परखावनो है।
अब देख बिचारि सँभारि कै माल जमा पर दाम लगावनो है॥५६॥

कवित्त।

ऐसी छबि कंज में न देखी खन-गंज में चकोर मोर मंज में न मीन की उमङ्ग में। कर्दकील कैरव कटाच्छऊ निखेद कर बेधि करि बानन से कानन के सङ्ग में॥ सती बाधि सौतिन के साल के करनहार हग्ग्याल बाल के बिसाल हग रङ्ग में। माते ऐसे अङ्ग में मनो मतङ्ग जङ्ग में न चंचलाई मृग में कुरङ्ग में तुरङ्ग में॥ ५७॥

गहिबो अकास पुनि लाहिबो अथाह थाह अति बिकराल ब्याल काल को खेलाइबो । सेर समसेर धार सहिबो प्रबाह बान गज मृगराज द्वै हथेरिन लराइबो ॥ गिरि सो गिरन ज्वाल माल में जरन होइ काशी में करौट देह हिमि में गलाइबो । पबिो बिष बिषम कबूल कवि नागर पै कठिन कराल एक नेह को निबाहिबो ॥ ५८ ॥

सेवती नेवार सेत हीरन के हार जूही जूथ औ अनार मोती बिद्रुम लसन्त भो । पन्ना पोखराज पत्र चम्पक समाज फाव माणिक गुलाब नील इन्दिबर गन्त भो ॥ माधवी नमूनो गऊ-मेदकुल सूनो दूनो औध बाटिका बजार पूनो बिलसन्त भो । जतन जलूम जोरि रतन रसाल रङ्ग अतन अनन्द हेतु जौहरी बसन्त भो ॥ ५९ ॥

सौरभ सुपास सोधि सोहत सिलीमुख हैं साहसी समीर साफ सोखी सो सबै जगे । कोकिला कलाप कम्प कौतुक कहै को कुञ्ज कमनीय केलि कला कलित ठगै लगै ॥ फूलन की फाव चारु चांदनी हिताब औध आनँद की आव नौल नेह उमगै लगै । पायक पपीहा पै जगावत प्रवीन पंचमायक प्रताप ऋतु नायक रगै लगै ॥ ६० ॥

आयो ऋतुराज परो मृगन समाज भाज बावरे बियोगी पात पूरब को जाफ भो । पुहुप पराग पौन पल्लव पपीहा पिक पीतम पिछानि प्रीति अवध इजाफ भो ॥ मुकुलित मालती मलिन्द मुखरित मंजु मैन मलकीयति मुलुक मानो माफ भो । साफ मो

सनेह खौफखद को खिलाफ भो मुनाफ भो मजा को जोहि जगत जुराफ भो ॥ ६१ ॥

मानिनी मवास औध माफिक मवास मानि मान मजबूत है मुखालिफ मलीक भो । मारुयो मनजात मारु मरजी मुफस्सिल मे मुदित मुहीम मल्ल मधु को अनीक भो ॥ मारुत मुसाहब मलिन्द मुखतार मंत्री मारू राग नौवति नकीब पिकपीक भो । फीक भो फसाद फूलहीक भो हकीक हियो नीक भो नजीक नेह रहम रफीक भो ॥ ६२ ॥

केतकी कतार चारु चम्प कचनार आंम अगर अनार डौर डार मार को जनै । पाटल पलास आस पास बास भास खास अवनि अकास प्रेम पास हास सो सनै ॥ चातकी सुचाह गन्ध-वाह को प्रवाह वाह राह रस को सुबाह कोकिला लिये भनै । औध उपराज सुख साज सो दराज दिल आजु ऋतुराज को समाज देखतै बनै ॥ ६३ ॥

आवन में अगर अनारन औ वारन में औ बल असोक औषधीन आवेयले को । अम्बर अटान आदि अलिन अवाज अङ्ग अटकी अवास अम्बु अम्बुज अकेले को ॥ आली अङ्ग असुक अभूषन अपीच औध आनद अतीव गने अब को अलेले को । आस आठहू अकास अवनि असेष अङ्ग आछो औध अमल बसन्त अलबेले को ॥ ६४ ॥

सन्त के असन्त के अनन्त जन्त मन्त के सुरति कन्त तन्त के बिलोकि बाग बन्त के । बन्त केहू बीरन समीरही रहै न देत

धीर सीर बीर लये सौरभ दिगन्त के ॥ गन्त के महान औध कान्ह की लहा न असहान मानवान मधुपान कुसुमन्त के। सन्त के कहन्त पिक बिरही दहन्त करौ कैसै बिना कन्त अन्त बासर बसन्त के ॥ ६५ ॥

पपीहा को कवित्त।

चातक चमार चीरो चौंकि चौकि देत चूखे चूकत न चोट चाण्डारन को मूखी है। बावरी बनावत बयारि बारिजाय या बिसासिनि बियोगीनी के दोष बिना दूखी है ॥ आये अब लौ न आली अवध अनन्ददान ऋतुराज रोपी है रमूज रीति रूखी है। काढ़त करेजो काटि कुहूकी कटारी कोपि कैलिया कसाइन कलंक ही की भूखी है ॥ ६६ ॥

कमल मो रङ्ग औ मुलायमता लीन्हीं सब चंचलता मीन खंज मृग श्यामताई है। मैनबान कुन्तन कटाक्ष की कटाई लीन्हीं मोदकता मत्त दान्ति कविता बताई है ॥ बसीकर्ण मोहन सो दोनो ये बिचारि लीन्ही गोरू द्वैज चन्द्रमा सी भ्रू की ब्रकताई है। यहि बिधि बिधि बिधिसकलसकेलि साज प्यारी नैन राखि कीन्ही सर्वोपरिताई है ॥ ६७ ॥

ऐसी नहिं मृगन न खंज मीन ऐसी लखी पेखी नहिं कुन्त नोक जहर सुढारती। नहिं ऐसी पन्नगी न गीसुरी रु आसुरी न किन्नरी नरीन बीच सोसिनान्न तारती ॥ हीरा की कनी हू ऐसी चूभै नाहि चित्त बीच देइ जाकी उपमा सो हारी हेरि भारती।

ऐसी बान मैन की न गांसी आंसी करै तन जैसी री कटाच्छ प्यारी तेरी करि डारती ॥ ६८ ॥

सवैया ।

नारँगी अच्छ औ श्रीफल स्वच्छ मनोज की गुञ्जन की छबि हारे।
कुम्भबधू बर के हैं किधौं २ कल्प रतीपति पद्मिनी हारे ॥
उन्नत है गिरि सो गिरि ईश किधौ मनमोहनि गोल बिहारे ।
कुन्दन कञ्जन रीति कि दुन्दुभि कै ये उरोज हैं प्यारी तिहारे॥६९॥

कवित्त ।

कहि गये आवन न आये मनभावन सु सावन तुलानो अति दोखि अकुलाती मैं । साल दै दै सालत सलाका जिमि सुधि आये जेती कही बातै निसि सरद सोहाती मै ॥ येते पै जु मनुहारि कीन्हों है किसोर आली योग को सँदेसो ऊधो ल्यायो लिखि पाती मैं । कर लेत काँप्यो कर लोचन उमडि चले जेते अङ्क देखे तेते छेद परे छाती मैं ॥ ७० ॥

कियो है करार सो बिसारि दियो दगादार नन्द के कुमार सङ्ग की सँयोगिनी बनै । कौन मुख लैकै ताहिं ऊधव पठायो इहां कैसे कही बानै हाय कहां लौ गिनी बनै॥ ग्वाल कवि याते एक बात तू हमारी सुनु जोपै यह ह्वैहै तौ न फेरि योगिनी बनै । कूबरी को कूबर कतरि लाइ दीजो हमै ताकी करै टोपी तब गोपी योगिनी बनै ॥ ७१ ॥

रामलला नहछू बिराग सन्दीपनिहूं बरवै बनाय बिरमाई

मति साँई की । पारवती जानकी के मंगल ललित गाय राम रम्य अज्ञा रची काम धेनु नाँइ की ॥ दोहा औ कवित्त गीत बद्ध कृष्ण कथा कही रामायन जिनै मांह बात सब ठाँइ की । जग में सुहानी जगदीशहूं के मन मानी सन्त-सुखदानी बानी तुलसी गोसाँई की ॥ ७२ ॥

अधर मधुर लाल लाल अरविन्द भाल लाल सिर पाग पेंच खैचि मन लसिगो । मेहँदी करन लाल जावक रसाल पद कंज मंजु लाल लखि भली भांति गसिगो ॥ लोक लाज कुल काज साज औ समाज सब लाल मुखचन्द हेरि अनायास नसि गो । युगुल अनन्य और सूझि न परत कछू ललित ललाई लाल लोचननि बसिगो ॥ ७३ ॥

सवैया ।

फागुन मांह भरो उत्साह सु चाह हजारन होत हमेसे ।
गावती गीत सुप्रीति पगी ललना गन डारती रंग रँगे से ॥
लाड़िली लाल गुलाल अबीर लिये पिचका कर कंज सुदेसे ।
युगम अनन्य उमग सताप भिजाय के भीजि रहे बर बेसे ॥७४॥

कवित्त ।

क्रीट कमनीय पंच खड चंड कर द्युति दाम को दबाय देत लेत मन मोल है । हीरन जड़ित महामाणिन खचित चारु रचित मनोज चोज सहित अतोल है ॥ बानक बिलोकि सुधि बुधि गति रोकि जात झलक लखत चहूंओर चित लोल है । युगल

अनन्य जाके उर न बसत छबि सोई सठ जनम जनम डमाडोल है ॥ ७८ ॥

चीरा पचरंग सीस ईसता सहित चारु चमक चलांक चन्द्र चांदनी चमन है। हीरा नवबरन बिचित्र मित्र मान मद समन सोहायो आन भांति छन छन है ॥ धीरा न रहत कहूं नेकहूं निहारि नैन चैन न परत चितवत चितवन है। युगल अनन्य पट पीरा मुख बीरा कर सोहे धनु तीरा हेरो जानकीरमन है ॥

सवैया।

आज सिया रघुबीर सखीह समाज सकेत बसन्त सजावत।
रङ्ग उमङ्ग अनन्त बिधान बितान लतान मनोज लजावत ॥
गावती गीत पुनीत अलीगन बीन मृदङ्ग रबाब बजावत।
युग्म अनन्य अजूब उछाह बिलोकतही भय भान भजावत।७७।

कवित्त।

चिबुक अधर मृदु मधुर कपोल गोल लोल कल कुण्डल सनेह सह हेरिये। मन्द मुसकान रसखान नेह निसि नैन अंजन समेर अवलोकि छबि छेरिये ॥ बार बार उर उमगाय नखसिख ध्यान सरस सजाय योग ज्ञान गुन गेरिये। युगल अनन्य सावधान सीय पीय जोहि मोहि एकरस तिलहू न मुख फेरिये ॥

बाड़व ज्यों अम्भ पर इन्द्र जैसे जम्भ पर रावन के दम्भ पर रघुकुल राज है। पौन बारिबाह पर शम्भु रतिनाह पर ज्यों सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है ॥ दावा द्रुमद्रुण्ड पर चीता

मृगझुण्ड पर भूषन भुसुण्ड पर जैसे मृगराज है। तेज तिमिरस पर कान्ह जिमि कस पर त्यों मलेच्छ बंस पर शेर शिवराज है॥

घोड़न गोंदाय सब धरती छोडाय लीन्ही देश ते निकारि धर्म द्वारा दै भिखारी से। साहू के सपूत समबन्धी शिवराज वीर केते बादशाह फिरैं बन बन बनचारी से॥ भूपन बखानै केते दीन्हे बन्दिखाने केते केते गहि राखै सख सैयद बजारी से। महतौ से मुगल महाजन से शाहजादे डाँड लीन्हों पकरि तैं पठान पटवारी से॥

कत्ता की कराकरी चकत्ता को कटक कूटो सो तो शिवराज कीन्ही अकथ कहानियां। भूषन भनत तेरे धौमा की धुकार सुनि दिल्ली औ बिलाइति लौं सकल बिललानियां॥ आगरे अगारन लौ फादती पगारन सँभारती न बारन मुखन कुम्हिलानियां। कीबी कहै यों करो गरीबी कहै भागि चलो बीबी बिना सूथन सु नीबी गहे रानिया॥ ८१॥

सेवा भूमिपाल बीर कत्ता के सकत तोरि रूम के चकत्ता को संका सरसात है। काशमीर काबुल कालिङ्ग कलकत्ता सबै कुल्ल करनाटक की हिम्मति हेरातु है॥ बलख विहार बङ्ग व्याकुल बलोच बीर बारहो विलायत विलात विललात है। तेरी धाक धूंधुर धरा में धँसि धाम धाम अंधाधुन्ध आंधी सी धधात दिन-रात है॥ ८२॥

गरुड़ को दावा सदा नाग के समूहन पै दावा गज-युत्थन पै सिंह सिरताज को। दावा पुरहूत को पहारन के कुलपर दावा ज्यों पच्छिन के गन पर बाज को॥ भूषन अखण्ड नवखण्ड

महिमण्डल में तिमिर पर दावा रवि-किरनि समाज को। उत्तर दखिन देश पूरब औ पश्चिम लौ जहां बादशाही तहा दावा शिवराज को ॥ ८३ ॥

आगमन सुनत सुजान प्राण प्रीतम को आनि सजे सखिअन सुन्दरी के आस पास ॥ कहै पदमाकर त्यों पन्नन के हौज हरे ललित लबालब भरे है जलबास बास ॥ गूंथि गूंथि गेंदे गज गौहरन गंजगुल गजक गुलाबी गुल गजरे गुलाब पास। खासे खसबीजन के खानि खानि खाने खुले खूबी के खजाने खस-खाने खूब खाम खास ॥ ८३ ॥

चन्द की कला सी कैसी भानु की प्रभा सी जैसी भानु की प्रभा सी कैसी दीपसिखा ज्वाल है। दीपसिखा जाल कैसी कुन्दन लता सी जैसी कुन्दनलता सी कैसी छबि छटा हाल है॥ छबिछटा हाल कैसी पोखराज लरी जैसी पोखराज लरी कैसी हेम कंज-नाल है। हेम कंज नाल कैसी सोनजुही माल जैसी सोनजुही माल कैसी जैसी वह बाल है ॥ ८५ ॥

खासी खासी कोठरिन में राउरी सौ सेजन सों आसपास अगर कपूर बगरे रहैं। दरन में परदे गलीचन सो सामा भूमि-सामा सुबरन के जड़ाऊ सो जड़े रहै ॥ ऐसे ठौर कन्तन सों युवती हेमन्तही मै पौढे पलका पै दोऊ आनन्द भरे रहै। सीतल सपट्ट मांह कपटे समूह सुख लपटे दुसालन में चपटे परे रहै ॥

कब दिन राति होत सांझ परभात यहै जानत न बात कोऊ रंग के रसाला मैं। कहै पदमाकर जुराफा से जुरेई रहैं जागत

न जागे सब जोतिहू की ज्वाला मैं ॥ ऊरुन से ऊरु मुख मुख से लगाये उर उर सों लगाये जागे पागे प्रेम पाला मै ॥ पूस को न पाला गनै दूखन दुसाला होत ह्वै रहे रसाल दोऊ एकै चित्रसाला मै ॥ ८७ ॥

अगर को धूप मृगमद को सुगन्धवर बसन बिसाल मोती अङ्ग ढाकियतु है । कहै पदमाकर पै पौन को न गौन तहां ऐसे भौन उमगि उमगि छाकियतु है ॥ भोग के सॅयोग योग सुरत हेमन्तही में एते और सुखद सुहाये वाकियतु है । तान की तरङ्ग तरुनापन तरनि तेज तूल तेल तरुनी तमोल ताकियतु है ॥८८॥

ग्रीषम के ताप तें अताप तन तायो रहै बरषा में मेघमाला अवली निहारी मैं । सरद सुखाई हेम हाहा कै बिताई तापै सिसिर सताई मन्द मारुत की मारी मैं ॥ रामनाथ होगी मैं किसोरी तब ऐसे कहै ऊधो यह बात कहि दीजो सभा सारी मै । आयो है बसन्त प्राण तन तें उफनान लागे अब ना बचैगी श्याम तेरी बेकरारी मै ॥ ८९ ॥

महराज भये गरुआई भई रसहू विष नोगि कै पीजतु है ।
तुम वेद पुरान सुनौ समुझौ सुख दे कै नहीं दुख दीजतु है ॥
कहि ठाकुर मोते बनी न बनी न बनी को बनी करि लीजतु है ।
हरि जैसी करी अपने ब्रज को अपनो करि ऐसो न कीजतु है ॥

जाके लगै सोई जानै व्यथा पर-पीरन को उपहास करै ना ।
सागर जो चित मों चुभि जाय तो कोटि उपाय करो तो टरै ना ॥

नेक सी किंकिरी जाके परै अतिपीरन कैस हूं धीर धरै ना। केसे परै कल एरी भटू जब आँखि में आँखि परै निकरै ना॥९१॥

तिन्है नाहिं सराहत कोऊ अहै जहँ यांचक ताही पतीजिये जू। हठ नाही की नाही भली है भटू तजि नाही विनै सुनि लीजिये जू॥ कवि शङ्कर जो रस नाही हिये रसनाहीं को तो रस दीजिये जू। यहि नाहीं में नाही कछू रस है मन में बसि नाहीं न कीजिये जू॥ ९२॥

गही जब बाही तब करी तुम नाही पांव धरी पुलकाही नाही नाही सो सोहाई हौ। चुम्बन में नाही औ अलिङ्गन में नाहीं परिरम्भन मै नाहीं नाही नाही अवगाही हौ॥ ठाकुर कहत जब डारी गलबाही तब करी तुम नाही आछी चतुर सोहाई हौ। करो नाही नाहीं जैसे डोलै परछाही जह हां ते नीकी नाही सो कहां ते सीखि आई हौ॥ ९३॥

सवैया।

आजु कहां अरसात जम्हात देखात कछू अब यों अलबेले।
लाल महावर भाल लसै अधरान पै अंजन को रँग मेले॥
त्यों परताप कहा कहिये पिय छोडि कहा इत आइ अकेले।
मोहन जाउ तहा हीं जहां जिन के सतसङ्गन में निसि खेले९४
गुरुलोगन की तजि लाज सबै हम प्रीति करी तुम सों बजि कै।
बिसराइ दई तुम तौन लला निबहीं नहि सो तनिको छजि कै॥
बदनाम भई अब रीति नई कहुँ रैन बसो अनतै भजि कै।
दिखरावन को यह रूप नयो इत प्रातहि आवत हौ साजि कै॥

कवित्त ।

गरद गुलाल मुख मण्डित ललित दृग कज्जल कलित मुकुलित प्राणप्यारी के । ईश कवि सोहै अंग बसन सुरंग रंग संग बालबृन्द वृषभानु की कुमारी के ॥ कहत अभीर हौ अभीर बलबीर जू से पार रंग धार तट कंचुकी किनारी के । कंचन के जालेदार बाले कर टार यार चूमि लै कपोल गोल २ मदवारी के ॥ ९६ ॥

अंजन दै नैन बान नागर समारे कर भृकुटी कमान खोर पनच चढ़ लीनै । ईश कवि सोरह सिँगार तुंग पैंदर के द्वादश हूं भूषण सवांरि चित्त दै लीनै ॥ कंचुकी पताका सारी नील को निशान करि दीने दाह नूपुर नगारे अलबेली ने । पीतम के सङ्ग रति जङ्ग जीतिवे के काज येते दल साजे आज अबला अकेली नै ॥ ९७ ॥

सङ्ग नन्दलाल के बिसाल रस रास कीन्हें होती थीं निहाल सो तो अलख लखावैगी । गरे भुज माल उर उर सों रसाल लाथो तामें गनपाल कैसे सेल्ही लटकावैगी ॥ नाम रूपलाल गुन गनै कुलजाल तजि जीहैं तौन कौन सोहस्मि रट लावैं गी । ऊधो जू कृपाल भला ह्वै करि दयाल भाखौ जियन खसम कैसै भसम रमावैगी ॥ ९८ ॥

सवैया ।

दीनदयाल कृपाल हमैं शरणागत राखिये नित्त नहो ।
मोहिं किंकर आपन जानि सदा गिरजापति लाज सभारि रहौ ॥

गानिये नहिं दोष कृपा करिये केहि के ढिग जाय कलेस कहौं।
आधीन कहै तुमते को बड़ो जेहि के दरबार में जाय रहौं९९॥

कुण्डलिया ।

दीनबन्धु करुणायतन कृपानन्द सुखरासि ।
त्राहि २ राखिय शरण काटि सकल जग फांसि ॥
काटि सकल जगफासि मोह क्रोधादि बृन्द जे ।
राखिय शरण उदार नाथ अब बिलम न कीजे ॥
दीजे भक्ति रसाल आपको सुयश हो बन्दी ।
नासि सकल दुखरासि शम्भु को बाहन नन्दी ॥ १०० ॥

मनहरण ।

औढरढरन अशरण के शरण हार आरतिहरण चरण चित लाइये । दीनन अधार प्रभु ज्ञान गुनपार राखो सरस उदार पतितन गति-दाइये ॥ बारक चढ़ाय जलबुन्द सिर नाय द्विजराज सुख पाय पाहि याहि सिर नाइये। शंकर दयाल चन्द्र-भाल ह्वै कृपाल दीजै भक्ति सो रसाल ताकि शरण सिधाइये ॥१॥

कूबरी की यारी को न सोच हमैं भारी ऊधो एकै अफसोस सांवरे की निठुरान को । योग जो लै आयो सो हमारे सिर आंखन पै राखन को ठौर तन तनको न आन को॥ अङ्ग अङ्ग ब्रती हैं बियोग ब्रजचन्द जू के औध हिए ध्यान वा रसीली मुसकान को । आंखै असुआन को करेजन में बान को जुबान गुनगान को औ कान बंसीतान को ॥ २ ॥

सवैया।

निसि बासर श्याम स्वरूप लखै पल लागत चित्त अचेत गहैं।
प्रतिबाद करै तो वही गुन को बिमुखान ते नाहीं मिलाप चहै॥
गनपाल रसज्ञ जो ता रस कौ साखि ताही सों नेक प्रमोद लहैं।
सत नेह की बात सतानन में असतान के जी में परै सो कहैं॥३॥

कबहूं मुख की छबि पै अरुझैं सुरझैं जल बेग बहावो करैं।
तन पानिप पै छन देत मनै कुल लाज सुबुद्धि भुलावो करैं॥
गनपाल सदा निज स्वारथ सों चित प्रेम नदी उमगावो करैं।
सजनी तन भूप अनूप बने दृग देखत रूप बिकावो करैं॥ ४॥

लखि कोमल मंजु सरोज प्रभा मुख सेति सदां तरसोई करैं।
तन पानिप चन्द छटा दरसे सुखसिन्धु हिये सरसोई करैं॥
गनपाल सखी बिरहागिनि सो जगजाल सबै झरसोई करै।
मन चेत को देत सहेत तऊ दृग आनन्द पै बरसोई करैं॥ ५॥

चारि हूं ओर ते पौन झकोर झकोरनि घोर घटा घहरानी।
ऐसे समै पद्माकर कान्ह की आवत पीत-पटी फहरानी॥
गुञ्ज की माल गोपाल गरे ब्रजबाल बिलोकि थकी थहरानी।
नीरज ते कढ़ि नीर-नदी छबि छीजत छीरज पै छहरानी॥६॥

दन्त की पङ्गति कुन्दकली अधराधर पल्लव खोलन की।
चपला चमकैं घन बिज्जु लसै छबि मोतिन माल अमोलन की॥
घुंघुरारी लटैं लटकैं मुख ऊपर डुति दीपति लाल अतोलन की।
नवछाउरि प्राण करै तुलसी बलि जाउं लला इन बोलन की॥

कबित्त।

दौरि दौरि घोरि घोरि कोरि कोरि मेघ यों दिसा दिसानि सासि कै निसासि कै दिनेस के। बलाक दन्त झलते मनोपहार पेलते सो औध ज्यों पठेवटे गनेस के अदेस के ॥ घूमि घूमि झूमि झूमि चूमि चूमि भूमि को जुटै छुटै हुटै बुटै मुटै लुटै रसेस के। भरे नदी सकुण्ड से झरैं फुहार सुंड से अरण्य झुण्ड झुंड से बितुण्ड से सुरेस के ॥ ८ ॥

सोनहरे सेल्हीदार तेलिआ लखौरी लाल सबुजा सुरङ्ग किसमिसी सुर खेले के। सन्दली सँजाफी सिरगा समुन्द अबलखी बीर तागरा दराज मोल औ महेले के ॥ खिङ्ग चम्भा चाकगुली केहरी चीनी नुकरा मुसकी कल्यान औध आछे मनरेले के। पौनगति पेले नभ फेले मेघमेले कीन बेले अलबेले बाजी इन्द्र के तबेले के ॥ ९ ॥

काबली सिराजी लक्का लोटन गिरहबाज जोगिआ पटैन चपचीनी लीला लाल है। गोला कलपेटि आनि सावरा सुवेसराजा गमसकी ठठीर चोवा चंदन मराल हैं ॥ तामड़ा पिलङ्ग दो प्रहरबाज धरिआ मभूरा कौड़िन सुरुख औध उपमाल हैं। सोहै मेघमाल ये बहाल अन्तराल सुरपाल के कपोतजाल कैधों ये बिसाल हैं ॥ १० ॥

सुरुख सहाबी सूहे सन्दली सपेद स्याह सफताल सोसनी सुरङ्ग सजवाले हैं। सबुज सोनहरा सगरफरा समेत साफ सरब-

ती सोफी सुरमई से निकाले हैं ॥ आसमानी आबी आगरई औ अबीरी औध आवासी अरंबवानी अव्वल अभ्याले हैं । आछे औधवाले अबमाले हैं अकास कैधौं फैले आजु आले मघवान के दुसाले है ॥ ११ ॥

किसमिसी कोकई कपूरी कोच की है काहीं किसमिसी कासनी फियाजी कजपूत के । जाफरानी जीजई बदामी बरसई औध बैंजनी बनोटी ऊदे मूंगिया अभूत के ॥ फाकतई फीलई गुलाबी लाखी फालसई नाफरमानी नसूनी नारंजी सबूत के । चम्पई अनाले तूसी पीले पिसतई काले पावस घनाले कै दुसाले पुरहूत के ॥ १२ ॥

बाटिका बिहङ्गन पै बारिजात रङ्गन पै बायु बेग गङ्गन पै बसुधा बगार है । बांकी बेनु तानन पै बंगले बितानन पै बेस औध पानन पै बीथिन बजार है ॥ बृन्दाबन बेलिन पै बानिता नबेलिन पै ब्रजचन्द केलिन पै बंशीवट मार है । बारि के कना-कन पै बद्दलन बांकन पै बीजुरी बलाकन पै बरषा बहार है ॥

यमुना के पावन पुलिन जे सुभावन के पावन के पावन लों सारदा गुनावन को । भिचकी चलावन पै कुच की हलावन त्यों चूनरी चुनावन को कहे सुहावन को ॥ देखे बनै भावन प्रसेद मुख आवन को मोती मनो प्रेम हंस सावन लुनावन को । आई मनभावन बुलावन भुलावन पै सावन सुहावन को गावन सुना-वन को ॥ १४ ॥

बैठी मंच मानिक को फेरत रई को औध माधुरी की मूरति

सी सूरति सनेह की । सावन सुहावन को भावन सखीन साथ तैसई सोहाई आई छटा घटा मेघ की ॥ ता समै बजाई कान्ह बंशी तान आई कान सुधि सी हेरानी हिये मैनवान बेह की । दूध की न दही की न माखन मही हू की न कुल की कही की न देह की न गेह की ॥ १५ ॥

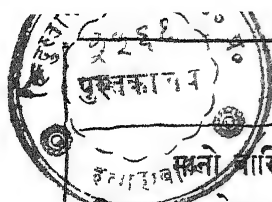
सवैया ।

होय पियूख पयोनिधि ते बिधु जीति प्रकाश अकंटक छावै ।
बोलनि हांस बिलासनि खोलनि डोलनि सोम सिँगार बतावै ॥
औध अनन्द लखे ब्रजचन्द यों आदर सोम अनूप महा वै ।
राधिका के मुख के सुखसिन्धु की सीकर ताको सरोज न पावै ॥

अब यों मन आवत है सजनी उनसों सपनेहुँ न बोलिये री ।
अरु जो मिलजे ह्वै मिलैं तो मिलैं मन से गसगुंज न खोलिये री ॥
दृग देखन की कछु सौंह नहीं उन गोहन भूलि न डोलिये री ।
घनआनंद जानि महा कपटी चित को न प्रयोजन फोलिये री ॥

कवित्त ।

ऊधो सुनो ऊधम मचायो बर्षा ने हरि बिन हर्षाने ते बखाने केती भांती हैं । भकती है भुजङ्ग भयावनी मयूर बोले ओलती अहू ते एक हू ते प्रान खाती है ॥ घोर घन टारि घहरात जो सुमाति जात कैसे के गुदरती राती उदारतीं छाती है। करन कटा सो बिज्जुछटा की तडप देखि तरप अटा सी घटा घिसि घिसि जाती है ॥ १८ ॥



सनो वारिनिधि की जिमी सी सिफी आसमान शरत दिशान घन घोर घहराती है। मदन नरेश जू को चमू चढ़ि तुङ्ग तुङ्ग चुगैं धरि छत्रिन की छटा छहराती है ॥ मोहन भनत नील गिरि की गिरा सो चारु बनी हेम पच्छ स्वच्छ महत् कहराती है। माती है मतङ्गन ते उमाड़ि उमड़ाती आज तरप अटा सों घटा घिसि घिसि जाती है ॥ १९ ॥

पिय पैये तो बोध बतैये घने जेहि पैये जो औध अतीव कहां। ये कलंकिनि कोयल काढिहैं वैर बुरो बिधु जीव छपीव कहां ॥ उपमान कहाय है हाय किते मुरछाय कह्यो घरी तीन महां। अहो नाह मै काह कहोगी तबै पुछिहै पपिहा जबै पीव कहां ॥ २० ॥

दोहा प्रेमसागर ।

बिधि हरिहर जाको सदा जपत रहत हैं नाम ।
बसो निरन्तर मो हिये सिया सहित सो राम ॥ २१ ॥
मन चाहत सब दिन रहौं तव ढिग ये प्रिय नात ।
काह करौं कछु बस नहीं परालब्ध की बात ॥ २२ ॥
तव बिछुरत छण मैं मरों काह जियो बिन तोहिं ।
तव मूरति उर में बसी वहै जियावत मोहिं ॥ २३ ॥
गनप गिरा गुरु गौरिपति सीतापति-पद ध्याय ।
बरणत राधाबर-चारित रसिक जनन सिर नाय ॥ २४ ॥

कवित्त ।

गनपाल हालचाल बिमल बिसाल बानि राजत अमल तल

कमल पदन के। उर गुंजहार बनमाल वारापार बनी सुखमा अपार रूपसागर हरन के॥ सिखिमख मुकुट लकुट कर कञ्चन की पीतपट लपट छुटान के कदन के। जग के छदन मुसुकान में रदन सोहैं छबि के सदन मनमोहन मदन के॥ २५॥

सवैया।

हम हूं सब जानति लोक की चालहिं क्यों इतनो बतरावती हौ।
हित जामे हमारो बनै सो करो सखियाँ सबै मेरि कहावती हौ॥
हरिचन्द जू यामे न लाभ कछू हमै बातन क्यों बहरावती हौ।
सजनी मन पास नही हमरे तुम कौन कों का समझावती हौ॥

अबहीं मिलिबो अबहीं मिलिबो यह धीरज हूं में घिरैबो करै।
उर तै बढ़ि आवै गरे ते फिरै मन को मन माहिं घिरैबो करै॥
कबि बोधा न चाह हितू हित की नितही हिरबा सी हिरैबो करै।
कहते न बनै सहतेही बनै मनही मन पीर पिरैबो करै॥ २७॥

तुम आपनी ओर चहै सो करौ हम आपनो नेह न छोडिहैं जू।
तुम बोलो चहै अनबोलो रहौ हम प्रीति सो नैन न मोरिहै जू॥
बिधि को जो लिखो सो मिटैगो नहीं बिरहानल में बिष घोरिहै जू।
लिखि देत हैं कोरहि कागज पै बस और सों प्रीति न जोरिहैं जू॥

गुणगाहक सो बिनती इतनी हकनाहक नाहिं ठगावनो है।
यह प्रेम बजार की चांदनी चौक में नैन दलाल अँकावनो है॥
गुन ठाकुर ज्योति जवाहिर है परबीनन सों परखावनो है।
अब देखु बिचारि संभारि कै माल जमा पर दाम लगावनो है॥

यह मेरी दशा निसिबासर है नित तेरी गलीन को गाहिबो है।

चित कीन्हो कठोर कहा इतनो अस तोहिं नहीं यह चाहिबो है॥
कवि ठाकुर नेक नहीं दरसो कपटीन को काह सराहिबो है।
मन भावे तिहारे सोइ करिये हमैं नेह को नातो निबाहिबो है॥
उचके कुच के कच के भर सों लचके करिहां मतिमन्दहु मैं।
अधरा मै मिठाई है ऐसी कछू वह तो मिसिरी में न कन्दहु मैं॥
मुख की छबि सो दबिजात सरोज फिकाई सी धावत चन्दहु मैं।
जो पै ऐस हूं राधे सो रूसत हैं तो सयान कहा नदनन्दहु मैं॥

दोहा।

तु क्यों न मानत मुकतई तुम बिन हमैं न चैन।
निसिबासर देखत रहत तऊ न मानत नैन॥ ३२॥

सवैया।

सुनि नेहभरी बतियाँ हिय की मुख इन्दु सो वा मग फेरते तौ।
मन धारि दया प्रतिपालत जानि सुधानिधि बानि सों सेरते तौ॥
गनपाल भ्रमी मग कुजन धीर बिचारि दयानिधि टेरते तौ।
कबहुं करि सूधे सरोज से नैन मया करि मो दिसि हेरते तौ॥
रूप अनूप दियो बिधि तोहिं तो मान किये न सयान कहावै।
और सुनो यह रूप जवाहिर भाग बड़े बिरले कोऊ पावै॥
ठाकुर सूम के जात न कोऊ उदार सुने सबही उठि धावै।
दीजिये ताहिं दिखाइ दया करि जो चलि दूर ते देखन आवै॥

दोहा।

नीच निचाई जौ तजै तो चित अधिक डरात।
ज्यौं निकलंक मयंक लखि गनैं लोग उतपात॥ ३५॥

सवैया।

सोहैं सहेलिन में सुकुमारि सवांरे सिंगार सुभांति भली के।
सामुहे आरसी में लखि रूप भये उर सीतल छैल छली के॥
आंजिबे लोचन को लछिराम जू अंजन आंगुरी बीच लली के।
चेटुआ भोर मलिन्द को यों चपक्यो मनो कोर गुलाबकली के॥

सांझ ही सो रँगरावटी में मधुरे सुर मोदन गाय रही है।
सांवरे रावरे की मुसुकानि कला कहि के ललचाय रही है॥
लालसा में लछिराम निहोरि अबै कर जोरि बुलाय रही है।
बैजनी सारी के भीतर में पग-पैजनी प्यारी बजाय रही है॥

कवित्त।

पैजनी झमक पायजेब की जमक रङ्ग जावको चमक महाधीरज हितै गई। लंक को लचानि रोमराजी की रचनि चारु चोली बिरचनि सो बियोगिनि बितै गई॥ कबि लछिराम घालि घूंघुट मदन चन्द मन्द मुसुकानि की मरोरनि हितै गई। सांकरी गली में डारि सांकरे सनेहन की सांकरे समर चारु चखन चितै गई॥ ३८॥

सवैया।

चख चंचल चारु चुरावत चित्त कछू मुसकात औ लाजत हैं।
उठि प्रात समै बलदेव सखी पर्य्यंक बिचित्र पै भ्राजत है॥
जगजीवन राम सिया शुभ अङ्गन भूषण वेस विराजत हैं।
अवनीतनया तन हेरि रहे सुख सों दोउ सामुहे राजत है॥

आजु लखी ब्रजराज प्रिया पर्य्यंकहिं पै सुख व्है रहे हैं बर।
आनँद सो मुसकाय कछू बलदेव तमोलहिं लै रहे हैं कर॥
सो भर मैन महीपति के भट लाज समाजहिं कै रहे हैं डर।
चारिहू नैन कसाकसी के भृकुटी धनु पै जनु दै रहे हैं सर॥
कुलकानि सुबानि सुनी सिगरी उर धीरज नेक थिरात नहीं।
मृदु मूरति सांवरी बावरी कै चलिगै कितहूँ सो सुझात नहीं॥
गनपाल कहै तू मिलावन आनि सो मों मन में तो बिसात नहीं।
सिख तेरी है सीतल नीर सी पै बिरहागि हिये की बुझात नहीं॥

कवित्त।

आजु कुंज मन्दिर अनंद भरि बैठे श्याम श्यामासङ्ग रङ्गन उमङ्ग अनुरागे है। घन घहरात बरसात होत जात ज्यों ज्यों त्योंही त्यों अधिक दोऊ प्रेम पुंज पागे हैं॥ हरिचन्द अलकै कपोल पै सिमिट रहीं बारि बुन्द चुवत अतिहि नीक लागे हैं। भीजि भीजि लपटि लपटि सतराइ दोऊ नीलपीत मिलि भये एकै रङ्ग बागे है॥ ४२॥

सवैया।

ब्रज के सब नाउ धरैं मिलि ज्यों ज्यों बढायकै त्यों दोऊ चाव करैं।
हरिचन्द हँसैं जितनो सबही तितनो दृढ़ दोऊ निभाव करैं॥
सुनि कै चहुंधा चरचा रिस सों परतच्छ ये प्रेम प्रभाव करैं।
इत दोऊ निसंक मिले बिहरैं उत चौगुनो लोग चवाव करैं॥४३॥
हौं करि हारी उपाव घनी सजनी यह प्रेम फँदो नहिं टूटै।

बाढ़त जात व्यथा अधिकी निसिबासर को बिरहानल घूटै ॥
मोहिं देखाव लला मुखचन्द सु प्रेमसखी इतनो यश लूटै।
लालन देखत जौ मरिजाउं तो मैं बलिजाउ महादुख छूटै ॥४४॥
प्रेम पयोधि परेउ गहिरे अभिमान को फेनु कहा गहि रे मन।
कोप तरङ्गनि सो वहिरे पछिताय पुकारत क्यों बहि रे मन ॥
देव जू लाज लिहाज ते कूटि रह्यो मुख मूंदि अजौ रहि रे मन।
जोरत तोरत प्रीति तुहीं अब तेरो अनीति तुहीं सहिरे मन ॥
मोहन को मन मोहन कौ बसि ले पद पंकज मौन मझारो।
त्यों गनपाल न चाउ हिये विष लेत सुधा हरि छ्वै करि डारो ॥
येकौ चलेगी न तेरी अली सब रहैं धरी उर माहिं हजारो।
ठाठ परो सब योंही रहैगो चलैगो जबै कढ़ि प्रान वजारो ॥
मङ्गल के पद जानो नहीं तुम जंगलबासी बड़े खल खाली।
रागे न रङ्ग उमङ्ग भरे सुक पाले न जू पिंजरान की जाली ॥
पाके अनार के बीजन के रस छाके नही यह कौन खुसाली।
खात कहा खटजामुनि के फल कोचकी होत है चोच की लाली ॥
दृगलाल बिसाल उनीदे कछू गरबीले लजीले सु पेखहिंगे।
कब धों सुथरी बिथुरी अलकैं झपकी पलकैं अबरेखहिंगे ॥
कवि शम्भु सुधारत भूषण वेस निहारि नयो जग लेखहिंगे।
अँगिरात उठी रतिमन्दिर से कब मोरहिं भामिनि देखहिंगे ॥

कबित्त।

करम करम कर पति सों मिलाप भयो आनन्द उमङ्ग इत उर न समाति है। सुक्ख महादुक्ख मोहि दीजिये न भूलि नाथ

घरी की धमक सुनि छाती अकुलाति है ॥ जनम जनम लागि मानि हौ असान तेरो कहै कवि कृष्ण प्रीति हिये न समाति है। येरे घरियार-दार टेरि कहौं बार बार मोगरी न मार मो गरी-बिनि की राति है ॥ ४९ ॥

अमित पुराण वेद शास्त्रन को बांचि बांचि सासन बुझाय करि नितही थका करैं। द्विज बलदेव कहै बेदन को भेद लखि अमृतसी बानी सुनि कुपथ ढका करैं ॥ श्रोतन सों माखैं कछु गुप्तऊ न राखै मन चाखै शब्द सुन्दर सो नितही चका करै। कहत है ताको कछु जाने तामे याको नित भाषा बिन जाने सान्नि-पाती से बका करै ॥ ५० ॥

मोह की निसा में जात बासर त्रिजामें होत दिब्य तन छामें वैस नाहक बितावै तू। जैहै बीति जामै नेक पैहै न अरामैं ये न ऐहै तव काम वैजनाथ जिन्है ध्यावै तू ॥ लोभ जड़ता में देह गेह बनिता में भूलि भ्रमत धरा में हठता में काह पावै तू। चाहै शिवधामै अष्टयामैं सुख जामै छोड़ि झूठ धनधामैं राम-नामै क्यों न गावै तू ॥ ५१ ॥

बाल समै रवि भक्ष कियो तब तीनिहुं लोक भयो अँधि-यारो। ताहि ते त्रास भयो जग में सोइ संकट काहु से जात न टारो ॥ देवन आनि करी बिनती तब छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो। को नहिं जानत है जग में यह संकटमोचन नाम तिहारो ॥ ५२ ॥

प्रेमसखी।

फूलछरी तरवारि चली इत ते पिचका भरि मारति तीर हैं।
भींजि गई रँग से सिगरी बिथुरी अलकैं न सँभारत चीर हैं॥
शस्त्र प्रहार सहै सिगरे भट हासभरे न गनै तन पीर हैं।
प्रेमसखी प्रमदा मनमत्त खरी मनो घायल घूमत बीर हैं॥५३॥

कबित्त।

सोहैं सुचि सुभगात दामिनी सो दौरि दौरि कामिनी लपटि गई सचै सुकुमारे सों। गहि गहि ल्याई जू प्रबल घरहाई सबै होरी होरी करत किशोरी न्यारे न्यारे सो॥ प्रेमसखी गुलचीप सिगरे नचाय दीन्हों युवती बनाय बहु कहत बिचारे सों। अंजन अँजाय हम चूरी सारी पैन्हि आय कहियो हुजूर जाय प्रीतम हमारे सो॥ ५४॥

जनकदुलारी की सहेली अलबेली एक लाड़िले लखन सों गुमान-भरी झगरी। दूसरी चतुर वेष पूरुप बनाय आय जाय रामपास ठाढी भई छबि-अगरी॥ तीसरी तुरत दौरि बेंदी भाल भरत के लगाय रिपुसूदन को ल्याई छीनि पगरी। बात कहिबे के मिस प्यारे को बदन चूमि भागि आई तारी दै हँसन लागीं सगरी॥ ५५॥

सवैया।

और सहाय भई प्रमदा सब मित्र को ल्याइ सखी यहि ओर का।
भाग बड़े इनके कहिये तिय की छवि दीजिये राजकिशोर को॥
आजु खवासी करो सियकी युवती तन धारि खवावो तमोर को।

दासी सबै हम ह्वै हैं लला मुख ते भरतार कहौं चितचोर को ॥
जानि हैं जो इनके गुनको तिनके जग दोऊ सबै बिधि बानि है।
बानि है बिश्व के पोषण की तिन कों भरतार कहैं कछु हानि है।
हानि है प्रेम सखी कबहूं जिन को सिय आपु सखी करि मानि है॥
मानिहै ताहिं बिरंचि सदा जिन पै सियकी सियरी दृग जानि है।

रामलला झूलना।

महबूब गली दलदली खूब पग धरतेही अरझट्ट हुआ।
फिर कोइ उपाय नहि बन्य परै जग सेती भी खटपट्ट हुआ॥
दिलगीर फकीर फिराक वही गलतान हाल बरबट्ट हुआ।
रामलला उस छैल छबीले को लखते झटपट्ट हुआ॥ ५८॥
पग नख सुखमा खोजत उपमा थकि रही शारदा भटकि २।
घनश्याम रूप अभिराम देख गयो काम वामयुत सटकि २॥
सुनु बीर कीर की नाईं मन फँसि जुलुफ जाल में लटकि २।
रामलला दृग बांकेन में सखियां अंखियां रहि अटकि अटकि॥

बन ठन्य चले सब छैल भले लखि मोहीं पुर नागरिया जी। केती मोह जाल फँसि बस्य भई मुसक्यान मोहनी केती डारियां जी॥ केती जुल्फ पेंच बिच उरझि रही केती नैन सैन सों मारियां जी। रामलला लखि छक्य रही तन धन धाम सुवारियां जी॥ ६०॥

कटि पट पीत तुनीर कसे चहुँघा मुक्ताहल लागरियां।
सर चाप मनोहर भुज बिशाल सिर कीट अधिक छबि आगरिया॥
चख चंचल रूप अनूप लसै मुसकान मनोज उजागरिया।

हँसि रामलला मनमोह लियो सब जनक नगरकी नागरिया ।

ढाल ढरन हरि शरण साग करि करभ कुलह अँग रच्चा है ।
तरकस तीर सतो गुण सर भरि प्रेम फेट कटि खच्चा है ॥
ध्यान धनुष गुरुज्ञान पुरकसी नाम चौकसी बच्चा है ।
रामलला समसेर सुरति गहि सूर सिपाही सच्चा है ॥ ६२ ॥

हाल बेहाल हाय हरदम में सही इश्क दी चोटै है ।
कारी घाव खाय दिल अन्दर दिलवर दिल पर लोटै हैं ॥
जिगर जिकर क्या करै फकीरी दिल दिलगीरी मोटै हैं ।
रामलला सिर इश्क हाथ दिया फिर क्या करना ओटै है ॥६३॥

पद गाने का ।

गुरूजी खूब सिखलाई रटन सियाराम रटने की ।
जुगुति मजबूत बतलाई सकल जंजाल कटने की ॥
अगम की गैल दिखलाई दसा मति गति पलटने की ।
अजूबा चाख चखलाई न है अब चाह घटने की ॥
दिलअन्दर रेख खचलाई पिया छबि है जो जटने की ॥
अबिद्या मूल बिचलाई गरूरी फौज हटने की ।
लिया इकरार लिखवाई ज्ञान मैदान डटने की ॥
कपट की टाटी खिसलाई बिरह बस्तर के फटने की ।
लगन क्या रामलला लाई गरे प्यारे लपटने की ॥६४॥

हम हैगे इश्क दीवाने हमन को होसदारी क्या ।
रहैं आजाद इस जग से हमन दुनियां से यारी क्या १ ॥
खलक सब नाम अपने को बहुत कुछ सिर पटकते हैं ।

हमन गुरुज्ञान है आलम हमन को नामदारी क्या २ ॥
जो बिछुड़े हैगे प्यारे से भटकते दरबदर फिरते ।
हमारा यार है हम में हमन को बेकरारी क्या ३ ॥
न पल बिछुड़े पिया हमसे न हम बिछुड़े पियारे से ।
जहां यह प्रीति लागी है तहां फिर इन्तज़ारी क्या ४ ॥
पिये रसप्रेम मतवाला फिकर की क्या जिकर कीजै ।
जो जानत है सबन घटकी उसे ज़ाहिर पुकारी क्या ५ ॥
कबीरा इश्क मत्कुकरा गरूरी दूर कर दिल से ।
य चलना राह नाजुक है हमन सिर बोझ भारी क्या ॥

राग होली ।

सत सग रंग भेद ना जाना । बाजीगर की आतशबाजी देखत मन ललचाना । तन मन धन योबन मदमाती भूली ठौर ठिकाना, पिया घर ना पहिचाना १॥ लरिकाई लरिकन सँग खोई ज्वान भये अभिमाना । भव दुखरोग ग्रस्यो बिरधापन आयो यम परवाना, सजन गृह कीन्ह पयाना २॥ जन्म कर्म धिरकार सखीरी पतिहित ब्रत नहिं ठाना । नेह निबाह सुभिरि पीतम को जो न हृदय हरषाना, ताहिं जड़ जानु पखाना ३॥ साहबदीन सदा सुख सङ्गी प्रभु सुन्ना मनमाना । द्वै अक्षर सुमिरण सुभ सङ्गति मागु यही बरदाना, दया करि दे भगवाना ४ ॥ ६६ ॥

सँभरि होली खेलिये रघुबीर । आवत है श्री जनक-नन्दि-नी सङ्ग सखिन की भीर १ ॥ त्यहि अवसर तहँ आइ गये तब लखनलाल रणधीर । बोरि दई सारी चूनरिया महरानी जी की

चोर २ ॥ रामदास दे हांक कहत हैं सुनिये चारिउ बीर । आजु भाजि कै नहिं उबरोगे श्रीसरयू के तीर ३ ॥ ६७ ॥

राग विलावल ।

प्रात समय दधि मथत यशोदा अति सुख कमल नैन गुण गावति । नील बसन तन सजल जलद मनु दामिनि दिवि भुज-दण्ड चलावति ॥ चन्द बदनि लट लटकि छबीली मनु अम्मृत रस राहु चुरावति । गोरस मथत नाद इक उपजत किंकिणि धुनि सुनि श्रवण रमावति ॥ सूरस्याम अँचरा धरि ठाढ़े काम कसौटी कसि दिखरावति ॥ ६८ ॥

प्राणपति नाही आये बीती बहार । घुमडि आये घनघटा चहूंदिसि भरि गयो नदी अरु नार ॥ बिजुरि तड़पि घन गराजि बरषि जल सघन रैनि अँधियार । डरपति बिरह अकेली कामि-नि नहिं गृह राजकुमार ॥ यह तन रैन सैन को सपना निक-सत नाहीं सार । हे द्विजराम आस चरणन की राखो शरण उदार ॥ ६९ ॥

कवित्त ।

चारो युग बीच मीच मद को मलनहार नाम सुखसार तरवार धारधाक है । यामे जो मरम धुर धरम धुरीन जन जानत सुजान जौन दिब्य दिलपाक है ॥ माया मल मद मांझ बस्यो जाको चित्त तौन लखि ना सकत नाम महिमा अवाक है । युगल अनन्य जाहि रुचत न रामलाल ताहिं पर बार बार कोटिन तलाक है ॥ ७० ॥

नाम के रटन बिनु छूटत न दाग है। चाहो चारो ओर दौर देखो गौर ज्ञानहीन दीनता न क्षीण होय भीन अघ आग है॥ जहा तक साधन सुराधन बिलोकिये जू बाधन उपाधन सहित नट वाग है। तीरथ की आस सो तो नाहक उपास हेतु एकबार राम कहे कोटिन प्रयाग है॥ युगल अनन्य इत उत भ्रम श्रम दाम नाम के रटन बिन छूटत न दाग है॥ ७१॥

और नाम अपर मनीन के समान स्वच्छ रामनाम चित चिन्तामनि चाहि चाहरे। और नाम रैयत दिवान औ वजीर सम राम नाम अचल अखण्ड बादशाह रे॥ और नाम शिष्य सद समता सजाय सदा राम नाम गुरू गुण अगम अथाह रे॥ युगल अनन्य और नाम दिन चार प्यार राम नाम नेहनिधि नित्य निरबाह रे॥ ७२॥

सवैया।

हाली में हाली कहे कछुहू पर प्रीति पुनीत पगे बनमाली।
माली मिसाल फिरो बर बाग सुसींचत होत सुगन्ध सुसाली॥
साली मिलाप बिना सजनी उरताप कलाप न आवत लाली।
लाली ललाम लला की भला जब चित्त चढ़े तबहीं सुख हाली॥
प्रेम बराबर ईश सही नहीं बाद बिबाद बिषाद की गैल है।
या रस स्वच्छ प्रतत्त बिराजत मानत मूढ़ न ठानत सैल है॥
नाम निसोत सनेह समेत रटे यकतार लखे सत सैल है।
श्रीयुग्म अनन्य सुजान भले पर भाव बिहीन बराबर बैल है॥
मिलि गांव के नांव धरो सबही चहुँघा लखि चौगुनो चाव करो।

सब भांति हमैं बदनाम करो कहि कोटिन कोटि कुदांव करो ॥
हरिचन्द जू जीवन को फल पाय चुकीं अब लाख उपाव करो।
हम सोवत हैं पिय अंक निसंक चवायनै आओ चवाव करो ॥
नेह लगाय लुभाय लई पहिले ब्रज की सबही सुकुमारियां।
बेनु बजाय बुलाय रमाय हँसाय खिलाय करी मनुहारियां ॥
सो हरिचन्द जुदा कै बसे बधि ह्वै छल सों ब्रजबाल बिचारियां।
बाह जू प्रेम निबाह्यो भलो बलिहारियां मोहन वे बलिहारियां ॥
संसार असार निसारन है रहती हमेस भय मरने की।
अहशान वही साहब निदान लाजिम हारबार सँभरने की ॥
नर आसन में तू परा है कस अस समय नहीं बन परने की।
अब मकर न कर कर जिकर यही कैलासपती पग धरने की ॥
मोहिं किये बस मोह महा मदमत्त गयन्द गुमानउ हारै।
क्रोध बली बलवन्त बडो जब आवत अङ्ग अभङ्ग कै डारै ॥
थिरता न लहै चित बृत्ति जबै घटिका जो अनङ्ग तरङ्गन मारै।
साहबदीन जो लोभ जगै तो बिना करुणानिधि कौन सम्हारै ॥
डौरू डिमक डिमक बाजै कर ठाढ़ा ही बैल तड़क्कत है।
सीस जटा जहँ गङ्ग बहै वाके पांय पदुम्म झलक्कत है ॥
डारे बिछौना बघम्बर के कर ऊपर ब्याल लहक्कत है।
लखि आई सखी तेरे शङ्कर को हिय मांहि हमारे खटक्कत है ॥

दोहा।

कलियुग केशव नाम से सुफल होत सब काम।
अन्तकाल यम से छुटत बिहरत गोकुल धाम ॥ ८० ॥

कबित्त ।

बेनी गाठिबन्धन को बसन भुजङ्गपुच्छ उमा के बिबाह लोग संकित सहर को । लोचन अनल भाल रोचन सक्यो न करि सोचत पुरोहित बिलोकै मुख बर को ॥ भूत प्रेत डाकिनी पिशाच मड़वे में फिरै फफाकि फफाकि फनी उगलैं जहर को । कहा नेग योग जीव बचै को न योग तहां गारी देत भागे नेग-दारी सबै घर को ॥ ८१ ॥

छलन सो छैल तजी गोकुल की गैल लगी कुबिजा चुरैल पगी मन बच काय है । आप सुकुमारी हमैं करत भिखारी प्रीति पाछिली बिसारी ये कहाँ जू कौन न्याय है ॥ ब्रजकाम जीते ब्रज बाम सबही ते ये ममारख अनीते जी ते लगी सो जनाय है । मरन उपाय है बचै न कोऊ पायहै जो काहू कलपायहै सो कैसे कल पायहै ॥ ८२ ॥

सवैया ।

रामकी बाम जो आनी चुराय सो लंक में मीचु की बेलि बई जू ।
क्यों रण जीतहुगे तिनसों जिनकी धनुरेख न नांघि गई जू ॥
बीस बिसे बलवन्त हुते जो हुती दृग केशव रूप-रई जू ।
तोरि शरासन शङ्कर को पिय सीय स्वयम्बर क्यों न लई जू ॥

सिद्धि समाज सजे अजहूं कबहूं जग योगिन देख न पाई ।
रुद्र के चित्त समुद्र बसे नित ब्रह्महु पै बरणी जो न जाई ॥
रूप न रेख न रङ्ग बिशेष अनादि अनन्त जो वेदन गाई ।
केशव गाधि के नन्द हमैं वह ज्योति को मूरतिवन्त देखाई ॥

दोहा।

को बरणै रघुनाथ छबि-केशव बुद्धि उदार।
जाकी सोभा सोभियत सोभा सब ससार॥ ८५॥

कवित्त।

कौड़ी पै कनौड़े द्वार दौड़े फिरैं कूकुर सों खोवैं जो पचास आस पाये पांच दाम जो। जासो लघु लाभ देखै ताहिं को न पूछै बात पाये बिन काहू के न करै भले काम जो॥ भनै बिजै-भूप रूप नीति को न जानै ख्याति लीबो अनुरूप परजा के धन धाम जो। स्वामी के बिगारि काम आपनो सवांरि धाम ओई बदकार मंत्री होत बदनाम जो॥ ८६॥

दोहा।

रामचन्द्र रघुबंशमणि प्रबल प्रताप निधान।
आगम निगम पुराण नित मानत परम प्रमान॥ ८७॥
आये री घनश्याम नहिं आये री घन श्याम।
केकी कूजत मुदित मन नचत बियोगिनि-बाम॥ ८८॥
अतन करै शर को पतन हरि बिन मोंतन मांह।
को जानै ह्वैहै कहा अब आयो ऋतुनाह॥ ८९॥
सखा चन्द की चांदनी तातो करत शरीर।
छन छन सरसत असम-शर लागत मलय-समीर॥ ९०॥
मन तो मेरो तुम लियो मन बिन तन केहि काज।
की मन देहु दया करौ की तनमन तजि लाज॥ ९१॥

आवन कहि आये नहीं मन कपटी चितचोर।
मदन प्राण-ग्राहक भयो तुम बिन नन्दकिशोर॥ ९२॥
बोले ते बोले नहीं अनबोले जिय लेत।
रसिक लाल या निठुर सों कैसे कीजै हेत॥ ९३॥
नैनों के नोके बुरे उर सालत ज्यों तीर।
ढूंढ़े घाव न पाइये बेध्यो सकल शरीर॥ ९४॥
केतिक पनिघट घाट में केतिक हाट बजार।
रसिकलाल नैनान के मारे परे हजार॥ ९५॥
जब सुधि आवत मित्र की बिरह उठत तन जागि।
ज्यों चूने कीं कांकरी जब छिरकहु तब आगि॥ ९६॥
जाकी जासो लगन है रोकि सकै धौं कोय।
नेह नीर इक सम बड़े रोके दूनो होय॥ ९७॥
जाकी जासो लगन है कहां जाति कह पांति।
गुदरो कैसे ठींकरी अपनी अपनी भांति॥ ९८॥
तुम सुजान अलगरज हौ गरज बड़ी इत मोहिं।
दरस देत इत नैन को खरच लगत का तोहिं॥ ९९॥
रसिक लाल की अरज सुनि इतनो यश करि देहु।
की हँसि हेरो नजरि भरि की हमरो जिय लेहु॥ १००॥

कवित्त।

आनन्द अशेष देत राखत कलेश नहि राजत गणेश दिशि एक छबि छाकी है। एक दिशि दिपत दिनेश सब देश देश मेटत हमेश तम तोम द्युति जाकी है॥ एक दिशि लक्ष्मी नारा-

यण अनूपम है एक दिशि मूरति विशाल गिरिजा की है। हृदयारविन्दहि बसिन्द हित मीत सीस मध्यमाग भ्राजत गुमानेश्वर झांकी है ॥ १ ॥

अम्बर अरुण अरुणोदय प्रभा को देत माला मुक्ता मांग में मनै हरत बल सों। राजत प्रभात पर्य्यंक पै मयकमुखी जगमगी ज्योति हीर हारन अमल सों ॥ द्विज बलदेव केश छूटी लटै आनन पै तिनको हटावै मुख मंजुल के थल सों। तारन के मण्डल में तिमिर विचार मानो कालीनाग टारत कलानिधि कमल सों ॥ २ ॥

विद्रुम की व्यच पै बिराजत बिचित्र बाल मुकुलित माला मुक्तहीर उर भावतो। छूटी लटै कुटिल कपोल कुच मण्डल लों कर सों सुधारत सुकबि छबि गावतो ॥ तारन की अवली कनक लतिका पै लसै उपमा अतूल बलदेव चित लावतो। मानों शम्भु शीश चढ़े पन्नग पियूष पीवै तिन को कमल सो कलानिधि हटावतो ॥ ३ ॥

गुंजत भ्रमर तार तारन सितार तार अतर फुहार मंजु बंजुल समीर के। बंसन-बिवर बंसी धुनि सुनि मनहर भूरुह गनप शब्द मुरज गँभीर के ॥ साखा लपटान छुटि भेटन फटान भाव पिक प्यौ रटान छटा गान सम तीर के। नृतक अपार कोकिलाली आली ठौर ठौर देखत बसन्त नृत्य धारन सुधीर के॥

कवित्त ।

सन्त असन्त न धीर धरैं सु कहा अबला निशि बासर अन्त की।

अन्त की बोल सुनावत कोकिल पीव कहाँ पपिहा गनगन्त की ॥
गन्त की औंध के घोस अली गनपाल सबै शरणागत तन्त की ।
तन्त की कीरति कन्त असन्तन ताप परी बाधिकाई बसन्त की ॥

सवैया ।

गुल गुललाला औ गुलाब गुलचीनी गुलदाउदी बिशद गुलसब्बो बिलगात है । चम्पक चमेली चारु चन्दन रु चांदनी से केवरा कुसुम केतकी के सरसात है ॥ बेला बेल बिशद बिसाल बेली सोहियत रस के बिसाल जूही जूथिक जनात है । सूरज-मुखी औ स्याम सेमर लसत नभ शरद बदर फूल बाग सो लखात है ॥ १ ॥

छप्पै ।

जहां उदित कचराज तहां देखत मुख इन्दै ।
जहां इन्दु को बास तहां फूल्यो अरबिन्दै ॥
जहां बसत सु मनोज तहा विवि शम्भु छवासी ।
पञ्चानन कटि जहां तहां गजमत्त गवासी ॥
गोपी कवित्त अचरज्ज यह अरि अरि सब संगै रहत ।
अति राजनीति तियतन नगर रिपुरामिलि छबि को गहत ॥
न कछु क्रिया बिन बिप्र न कछु कादरजिय छत्री ।
न कछु नीति बिन नृपति न कछु अच्छर बिन मंत्री ॥
न कछु बाम बिन धाम न कछु गथ बिन गरुआई ।
न कछु कपट को हेत न कछु मुख आपु बड़ाई ॥

न कछु दान सन्मान बिन नष्ट कुभोजन जासु दिन ।
यह कबित सु नर हरि उच्चरै कछु न जन्म हरिभक्ति बिन ॥
नेकबख्त दिलपाक वही जो मर्द सेर नर ।
अव्वल बली खोदाय दियो बिसियार मुलुक जर ॥
तुम खालिक दुर वेश हुकुम पाले सब आलम ।
दौलत वख्त बुलन्द जङ्ग दुश्मन पर जालम ॥
ऐ शाह तुरा गोयद खलक कवि नरहरि गोयद अज़चुनी ।
अकबर बराबर पादशाह मन्दिगर न दीदम् दर दुनी ॥ ९ ॥
तदिन सत्य जानि जाइ जदिन कोउ याचक जच्चै ।
तदिन सत्य जानि जाइ जदिन पर घर मन रच्चै ॥
तदिन सत्य जानि जाइ जदिन कोउ शरणहि आवै ।
तदिन सत्य जानि जाइ जदिन अरि सन्मुख धावै ॥
जानि जाइ सत्य नरहरि कहै बरु बिधना प्राणनि हरै ।
गोरच्छ अकब्बर साह सुनु सत्य सुमङ्गल ना टरै ॥ १० ॥

सवैया ।

ऐसे बने रघुनाथ कहै हरि काम कला छबि के निधि गारे ।
झांकि झरोखे सो आवत दोखि खड़ी भई आनि कै आपने द्वारे ॥
रीझी सरूप सौ भीजी सनेह यों बोली हरे रस आखर भारे ।
ठाढ हो तोसों कहौंगी कछू अरे ग्वाल बड़ी २ आँखिनवारे ॥

कवित्त ।

फूलन सों बाल की बनाय बेनी गुही लाल भाल दीनी

बेंदी मृगमद को असित है। अङ्ग अङ्ग भूषण बनाय ब्रजभूषण जू बीरी निज कर ते खवाई करि हित है॥ ह्वै कै रस बस जब दीबे को महाउर को सेनापति श्याम गह्यो चरण ललित है। चूमि हाथ लाल के लगाय रही आंखिन सों येहो प्राणप्यारे यह अति अनुचित है॥ १२॥

सवैया।

मेरी बियोग-बिथा लिखिबे को गणेश मिलैं तो उन्हीं ते लिखाओं।
व्यास के शिष्य कहां मिलै मोहिं जिन्है अपनो बिरतान्त सुनाओं॥
राम मिलैं तौ प्रणाम करौं कबितोष बियोग-कथा सरसाओं।
पै इक सांवरे मीत बिना यह काहि करेजो निकारि दिखाओं॥

कबित्त।

चित्त को भ्रमावैं छबि देखैं तहां जावैं चाह दूनी उपजावैं इन ऐसी रीति डारी है। नीर झरि लावै तन हूक ना बुझावै चैन पलक न लावैं नींद अनत सिधारी है॥ काहिये कहा री नेक मानत न हारी हम अति मनहारी ये कुपन्थे पगधारी हैं। तन तें मिली रहत मन में न लावैं नेक आखैं ये हमारी काहिबेई कों हमारी हैं॥ १४॥

सुरँग रँगीले अरसीले सरसीले सर सरस नुकीले मटकीले कीले काम के। सरबर मीले दरसीले सरसीले नीले सुन्दर सु-सीले उनमीले आठौ याम के॥ छाजत छबीले जसवन्त गर-बीले वेस लाजत लजीले जलजात अभिराम के। चोखे चटकीले झमकीले चमकीले चारु सोहत घतीले ये जतीले नैन बाम के॥

सवैया ।

ए करतार बिनै सुनि दास की लोकन के अवतार करो जनि।
लोकन के अवतार करो जो तो मानुषही को सवाँर करो जनि ॥
मानुषही को सवाँर करो तो तिन्हैं बिच प्रेम प्रचार करो जनि ।
प्रेम प्रचार करो तो दयानिधि केहू बियोग बिचार करो जनि ॥

गिरि सों गिरिबो मरिबो बिष सों निज हाथ सों काटिबो नीको गरे को
पावक में जरिबो है भलो परिबो भलो सिन्धु में जन्म भरे को ॥
त्यागिबो है सुरलोक को नीको सु और सही दुख नेक परे को ।
होत कलेस न जो इतने में सु होत बिदेसी सों प्रीति करे को ॥

कबित्त ।

तुमहीं बिचारो निरधारो प्रेम-पन्थन में भारी भारी ग्रन्थन में कैसी निसरत है । कहां आवै कहां जांय कासो कहै कौन सुनै मनसा बिकल याही मांझ मिसरत है ॥ ठाकुर कहत चित्त चलन ललन प्यारे न्यारे ह्वै सिधारे या निराली कसरत है । जासों मन लागो नैन लागे लगी प्रीति पूरी ताकी कहूं सूरति बिसारे बिसरति है ? ॥ १८ ॥

मधुर मधुर मुख मुरली बजाय धुनि धमाकि धमारन की धाम धाम कै गयो । कहै पदमाकर त्यों अगर अबीरन को करि कै घलाघली छलाछली चितै गयो ॥ को है वह ग्वाल जो गुवालन के सङ्ग में अनङ्ग छबि वारो रसरङ्ग मे भिजै गयो । बै गयो सनेह फिरि छ्वै गयो छरा को छोर फगुआ न दै गयो हमारो मन लै गयो ॥ १९ ॥

मोहिं तजि मोहने मिल्यो है मन मेरो दौरि नैनहूं मिले हैं देखि देखि साँवरे शरीर। कहै पदमाकर त्यों तान में सु कान गये हौ तो रही जकि थकि भूली सी भ्रमी सी बीर॥ येतो निरदई दई इनको न दया दई ऐसी दशा भई मेरी कैसे धरों तन धीर। होतो मनहूं के मन नैनहू के नैन जो पै कानन के कान तो ये जानते पराई पीर ॥ २० ॥

प्रात उठि मज्जन कै मुदित महेश पूजि षोड़स प्रकार के विधान विधि श्रोर कीं। आवाहन आदि दै प्रदच्छिणा परी है पाँय दोऊ कर जोरि सिर ऊपर निहोर की॥ आरसी अँगूठी मध्य लख्यो प्रतिबिम्ब प्यारी भनै रघुनाथ जरदाई मुख कोर की। मेरी प्रीति होय नन्दनन्दन सो आठौं याम मोसों जानि प्रीति होय नन्द के किशोर कीं ॥ २१ ॥

जैसी छवि श्याम की पगी है तेरी आँखिन में वैसी छबि तेरी श्याम-आँखिन पगी रहै। कहै पदमाकर ज्यों तान में पगी है त्योंही तेरी मुसकानि कान्ह प्राणन पगी रहै॥ धीर धर धीर धर कीरतिकिशोरी भई लगन इते उतै बराबर जगी रहै। जैसी रट तोहिं लागी माधव की राधे ऐसी राधे राधे राधे रट माधवै लगी रहै ॥ २२ ॥

एकै साथ धाये नन्दलाल औ गुलाल दोऊ दृगन गये री भरि आनन्द मढ़ै नहीं। धोय धोय हारी पदमाकर तिहारी सौंह अबतो उपाय एको चित्त पै चढ़ै नहीं॥ कहां आवैं कहां जाय कासों कहै कौन सुनै कोऊ तो बताओ जासों दरद बढ़ै नहीं।

येरी मेरी बीर जैसे तैसे इन आँखिन तें कढ़िगो अबीर पै अहीर तो कढ़ै नहीं ॥ २३ ॥

सवैया ।

वा निरमोहनि रूप की राशि जो ऊपर के उर आनत ह्वैहै ।
बारहिं बार बिलोकि घरी घरी सूरति तो पहिचानत ह्वैहै ॥
ठाकुर या मन की परतीति है जो पै सनेह न मानति ह्वैहै ।
आवत है नित मेरे लिये इतनो तो विशेषहुँ जानति ह्वैहै ॥२४॥

अब का समुझावती को समुझै बदनामी के बीज तो बो चुकी री ।
तब तो इतनो न बिचार कियो यह जाल परे कहौ को चुकी री ॥
कबि ठाकुर या रस रीति रँगे सब भांति पतिब्रत खो चुकी री ।
अरी नेकी बदी जो बदी हुती भाल में होनी हुती मु तो हो चुकी री

जिय सूधे चितौनि की साधै रही सदा बातन में अनखाय रहे।
हँसि कै हरिचन्द न बोले कबौ दृग दूरिहीं से ललचाय रहे ॥
नहिं नेक दया उर आवत है करि के कहा ऐसे सुभाय रहे ।
सुख कौन सो प्यार दियो पहिले जेहि के बदले यों सताय रहे ॥

छोड़ि कै प्रीति प्रतीति लला इन बातन सों मति बान से हूलियो ।
मांगत है इतनो तुमसो हमरे हिय पालन में नित झूलियो ॥
जोरि कै हाथ कहै हरिचन्द हमारी यहै विनती सो कबूलियो ।
आवो न आवो मिलौ न मिलौ पै हमै अपने चित सों मति भूलियो

द्वारेही आइ कढ़ै कबहूं कबहूं मृदु गाय कढै पिछवारे ।
बेनी पितम्बर की कछुमी कबहूं सिर ऊपर मौर सँवारे ॥
एक उपाय अनेक कला नँदनन्दन चाहत चित्त हमारे ।

भाजे कहां लो बचैं सजनी कहूं गाजै टरै टटकान के टारे ॥
आये हौ ऊधो भले ब्रजमें बहुतै दिनते करती उर जापनो।
आइये बैठिये माथन पै संग साथिन में गनती तुव थापनो ॥
श्याम की बातें कछू न कहो जिन छोड़ दियो पितु मातहु आपनो।
और कहा चहौ सो ना कहौ पहिले कहौ कूबरि को कुशलापनो ॥
कहां कलकंचन से तन सो औ कहा यह मेघन सो तन कारो।
सेजकली बिकली वह होत कहां तुम सोइ रहो गहि डारो ॥
दासजू ल्यावही ल्याव कहौ कछू आपनो वाको न नीच बिचारो।
कौल सी गोरी किशोरी कहा औ कहां गिरिधारन पाणि तिहारो ॥
कामरी कारी कँधा पर देखि अहीरहिं बोलि सबै ठहरायो।
जोइ है सोइ है मेरो तो जीव है याको मैं पाय सभी कछु पायो ॥
कामरी लीन्हो उढाय तुरन्तहि काम री मेरो कियो मन भायो।
काम री तो मोहिं जारो हुतो बरु कामरी-वारे बिचारे बचायो ॥

कबित्त।

छूट्यो गेह काज लोकलाज मनमोहनी को छूट्यो मनमोहन को मुरली बजाइबो। देखि दिन दू में रसखानि बात फैलि जैहै सजनी कहां लों चन्द हाथन दुराइबो ॥ कालही कालिन्दी तीर चितयो अचानक हौं दोउन को दुहूं दुरि मृदु मुसकाइबो। दोऊ परै पैया दोउ लेत हैं बलैया उन्हैं भूलि गई गैयां उन्है गागरि उठाइबो ॥ ३२ ॥

सवैया।

का कहिये परधीन भई गुरुलोगन में निशिवासर जीजिये।

ना तरु लाख बनै बिगरै निज अंक भुजा भरिकै मिलि लीजिये ॥
ठाकुर आवत यों मनमें कुलकानि को आजु बिदा करि दीजिये ।
जौ अपनो बस होइ सखी तो गोपालहिं आंखिन ओट न कीजिये ॥
नैनन नीर न धार अपार न हां करि सांस भरै सुख कन्द को ।
चापलता दरसाय रही बलदेव कहो सो बिचारि ले मन्द को ॥
लोक की लाज नही पटकी न तो तोर्‌यो अबै जग जाल के फन्द को ।
नाहक नेह की बातैं करै अरी नीके न तू निरख्यो नदनन्द को ॥
सांकरी खोरि में सांवरे सों जुड़ी दीठि सों दीठि मुकालिबे की ।
दृग देखि दली सकुची सिमटी सुधि ना रही घूंघुट घालिबे की ॥
यह धौं अपराध लगायो कहा पर ती के नहीं चित सालिबे की ।
यहि गांव-चवाइन सों मिलि कै परी प्रीति पतिब्रत पालिबे की ॥
ये ब्रजचन्द गोबिन्द गोपाल सुनो न क्यों केत कलाम किये मैं ।
त्यों पदमाकर आनँद के नन्द हौ नन्दनन्दन जानि लिये मै ॥
माखन चोरिकै खोरिन ह्वै चले भाजि कछू भय मानि जिये मैं ।
दौरिहूं दौरि दुर्‌यो जो चहो तो दुरो क्यों न मेरे अँधेरे हिये मै ॥
कासों कहौं कोउ पीर न जानत तासों हिये की बतैयतु नाहीं ।
चौचँद ठाकुर है ब्रज में त्यहिते छन ही छन ऐयतु नाहीं ॥
आय कै राह में भेंट भई छनएक मिले ते अघैयतु नाहीं ।
अङ्ग लगाइ कै जीबो चहै तिन्हे आंखिन देखन पैयतु नाहीं ॥
अँग आरसी से जो पै भाषत हौ हरि आरसीही को सवाँरा करो ।
सम नैन के खंजन जानत तो किन खंजनही को इशारा करो ॥
कबि शंकर शंकर से कुच जौ कर शंकर ही पर धारा करो ।

मुख मेरो कहो जो सुधाकर सों तो सुधाकर क्यों न निहारा करो॥
चन्दन पंक गुलाब के नीर उसीर को सेज बिछाइ मरो री।
तूल भयो तन जात जरो यह बैरी दुकूल उतार धरो री॥
देव जू सीरे सबै उपचार यही में तुसार को भार भरो री।
लाज के ऊपर गाज परै ब्रजराज मिलै सोइ आज करो री॥
जान पखौवन की सुधि हेत मयूरन देतीं भगाय भगाय।
मने के दियो पियरे पहिराउ सुभांव में प्यादे लगाय लगाय॥
भुलावति वाकै हिये ते हरी सुकथान में दासी पगाय पगाय।
कहा कहिये यह पापी पपीहा व्यथा हिय देत जगाय जगाय॥
बासुरी छोरि कै सारँगी लैकर नारँगी पति पटै रँगवायो।
मोर को मौर बिहाय गदाधर छोरि लटै नट वेष बनायो॥
गावत राग बिराग भरे अलि फेरि कै मेरे दुवार लौं आयो।
येती करी मोहिं देखिबे काज अभागी मैं कान्ह हिये न लगायो॥

कवित्त।

राजपौरिया के वेष राधे को बुलाय लाई गोपी मथुरा ते मधुबन की लतान में। कही तिन आय तुम्हे राजा कंस चाहत हैं कौन के कहे ते यहां लूटो दधि दान में॥ सङ्ग के सकाने गये डगर डराने हिये श्याम सकुचाने सो पकरि कियो पानि में। छूटि गयो छल वा छबीली को बिलोकन में ढीली भई मौहे वा लजीली मुसकान में॥ ४२॥

सवैया।

छितिपालन के दरबारन में अपकारी अपार अभगे मिले।

सुर-थानन तीरथ क्षेत्रन में झगरावल प्रोहित नांगे मिले ॥
कवि शंकर पास भले के बुरे बसैं फूल में कण्टक लागे मिले ।
हम लेन गये फल मीठे जहां तहां कूर बबूरहिं आगे मिले ॥

कवित्त ।

देखि लेती दृग भरि हरि धरि धीर आली चौगुनो चवाव फेरि कूटती तो कूटती । करि लेती मन के मनोरथ प्रवीन बेनी प्रीति पथवारी फेरि टूटती तो टूटती ॥ आवतो हमारी गैल छैल ब्रजचन्द प्यारो घैर घर बाहर की ऊठती तो ऊठती । लाय लेती छतिया में बतियाँ कै चित्तचाहि फेरि कुल गोकुल ते छूटती तो छूटती ॥ ४४ ॥

लावति न अंजन मँगावति न मृगमद कालिँदी के तीर न तमाल तरे जाति है। हेरत न घन गिरि गहन बनक बेनी बांधे ही रहत नीली सारी ना सोहाति है ॥ गोकुल तिहारी यह पाती बाँचिहैगो कौन याहू में तो कारे अखरान ही की पाति है । जा दिन ते लखे वा गवांरि गूजरी सों कान्ह तादिन ते कारो रँग हेरे अनखाति है ॥ ४५ ॥

कारो जल यमुना को काल सों लगत आली जानियत फैलि रह्यो विष कारे नाग को। बैरिनि भई है कारी कोयल निगोड़ी तैसी तैसही भँवर कारो बासी बन बाग को ॥ भूषण भनत कारे कान्ह को बियोग हमैं सबै दुखदाई भयो कारे अनुराग को । कारो घन घेरि घेरि मारो अब चाहत है ताहू पै भरोसो करै आली कारे काग को ॥ ४६ ॥

नित उठि आनि इत बोलि बोलि जात वेऊ झूठ भये बोल सबै बायस बिहङ्ग के। पतिया तिहारी तेऊ झूठ ये निवाज कबि झूठे दृग फरकै हमारे बाम अङ्ग के॥ कारे काग झूठे कारे कागदौ तिहारे झूठे कारे ये हमारे नैन झूठ बिन ढङ्ग के। कान्ह एक तुमहीं न मिले हमैं झूठे सब झूठ मिले दई के सँवारे कारे रङ्ग के॥ ४७॥

को हौ ज्योतिषी हौ कछू ज्योतिष बिचारि देखो याही धाम धाम काम जाहिर हमारो तो। आओ बैठि जाओ पा छुआओ पान खाओ नीके चित्त सों सुचित्त ह्वैकै गणित बिचारो तो॥ ठाकुर कहत मेरे प्रेम की परिच्छा शिच्छा इच्छा को प्रतीति ताहि नीके निरधारो तो। मेरो मन मोहन सो लागि रह्यो भांति भांति मोसों मन मोहन को लागिहै बिचारो तो॥ ४८॥

ज्योतिष के धारी कह्यो पण्डित पुकारी हम देख्यो है बिचारी भारी भाग है तिहारो तो। तेरे रस बस कान्ह यश को सराहत हैं मिलिबे के काज धेनु बन बन चारो तो॥ कहत अनन्द यह चन्दमुखी साच मान नन्द डर मान्यो तासो भयो है नियारो तो। धीर नेक धारो उर टारो दुख सारो सुख मिलै नन्दवारो प्यारो ऐसही बिचारो तो॥ ४९॥

भृकुटी तनी को सीसफूल की कनी को सोभा सकल सनी को ऐसो फूलो कंज फीको है। मैन की मनी को मैन-बान की अनी को पैन देन है धनी को हास हुलसानि ही को है॥ रूप अवनी को कहा रमा-रमनी को गजगति गमनीको लखि नीव

मैलजी को है। विश्वबन्दनी को मन्द हास कन्द नीको मुख चन्दहू सों नीको बृषभान-नन्दनी को है ॥ ५० ॥

कूबरी की यारी को न सोच हमैं भारी ऊधो एकै अपसोस सांवरे की निठुरान को। योग जो लै आये सो हमारे सिर आखन पै राखन को ठौर तन तन को न आन को ॥ अङ्ग अङ्ग बती हैं बियोग ब्रजचन्द जू के औध हिये ध्यान वा रसीली मुसकान को। आंखै अँसुवान को करेजो मैन-बान को औ कान बंसीतान को जुबान गुनगान को ॥ ५१ ॥

उझकि झरोखे झांकि परम नरम प्यारी नेसुक देखाय मुख दूनो दुख दै गई। मुरि मुसक्याय अब नेकु ना नजरि जोरै चेटक सो डारि उर औरै बीज बै गई ॥ कहै कबि गङ्ग ऐसी देखी अनदेखी भली पेखै ना नजरि में बिहाल बाल कै गई। गांसी ऐसी आंखिन सों आँसी आँसी कियो तन फासी ऐसी लटनि लपेटि मन लै गई ॥ ५२ ॥

सवैया ।

जानत तेई तुम्हैं जेइ जान गुमान भरे अपने मन में हौ ।
प्यार तें कोऊ कछू ना कहै बक हौ जू परे झख मारत रैहौ ॥
दूध औ पानी जुदो करिबे को कहैं जब कोऊ कहा तब कै हौ ।
श्वेतही रङ्ग मराल भए अब चाल कहौ जू कहां वह पैहौ ॥

एकै कहै सुख माल हरैं मन के चढ़िवे की सिढ़ी इक पेखैं ।
कान्ह को टोनों कियो कछु काम कवीश्वर एक यहै अवरेखै ॥

राधिका की त्रिबली को बनाव बिचारि बिचारियहै हम लेखै।
ऐसी न ओर न ओर न ओर है तीनि खचाव दई विधिरे खै॥५४॥

कबित्त।

मोसों कै करार गयो लम्पट लबार मन मानि अति बार मै सिंगारऊ बनायो री। छोडि कुललाज छोड़ि सखिन-समाज सखि छोड़ि गृहकाज ब्रजराज मन लायो री॥ कुंज निशि जागी बन सिंह प्रेमपागी मन एकऊ न लागी अब शुक्र उइ आयो री। सेइ बनमाली घेरि आये बनमाली झरै लागे बनमाली बनमाली ते न आयो री॥ ५५॥

चक्रवाक चक्रित चकोर मृग मीन मोर खंजन कपोत पिक चातृक चितै रहे। हिलत न पौन बन डोलत न चम्पडार चलत न चन्द रवि दङ्ग मन ह्वै रहे॥ बांसुरी बजाइ कान्ह नन्दन करत गान गोपी ग्वाल जीव जन्तु आनन्द उदै रहे। कंजनाल कुंजर पराग रस-मौर जाल मोती मुख मेलत मराल मन दै रहे॥५६॥

सवैया।

सांकरी गैल में भेंट भई लखि बेनी बियोग व्यथान में ठाढ़े।
चाहभरे दृग दोऊ दुहू के समोइ रहे अति धीरज गाढ॥
आइ न कोउ परे याहि संक न अंक भरे अति आँनद बाढ़े।
ढीली रसीली लिये अंखिया मुख दोऊ दुहून को जोहत ठाढ़े॥
आवती जाती किती बटपूजन बाल वा काहू के सङ्ग सनै ना।
ठाढ़ो हुतो उत लालची लाल सों वाहू ते प्रेम सों जात बनै ना॥

बीति गई तीथि यों परमेश सो आनि तियानि को कानि मनै ना ।
साँवरी सूरत में अट की बटकी भटू भाँवरी देत गनै ना ॥५८॥
बहु ज्ञान कथानि लै थाकी हौं मैं कुल कानिहु को बहु नेम लियो ।
यह तीखी चितौनि के तारन तें मनिदास तुणीर भयो इ हियो ॥
अपने अपने घर जाहु सबै अबलों सखि सीख दियो सो दियो ।
अबतो हरि भौंह कमाननि हेतु हौ प्राणन को कुरबान कियो ॥
दास परस्पर प्रेम लखी गुन छीर को नीर मिले सरसातु है ।
नीर बेचावत आपनो मोल जहां जहां जाइ कै छीर विकातु है ॥
पावक जारन छीर लगे तब नीर जरावत आपनो गातु है ।
नीर की पीर निवाहिबे कारण छीर घरी ही घरी उफनातु है ॥
घर बाहर के सब घेरे फिरैं जो अकेले कहूं करि पाइये तो ।
उनहीं की सबै मरजी की कहैं अपने जिय की समुझाइये तो ॥
कहि ठाकुर लाल के देखिबे को अब मंत्र यही ठहराइये तो ।
बतियां कहिबो जिनसों न बनै छतियां कहौ कैसे लगाइये तो ॥
एक वहै मुख देखाई भावत बादि सबै मिलि माड़ती राहो ।
कीजै कहा बस है न कछू सिगरी मिलि दाहन आई तो दाहो ॥
मोहिं न काज कछू कुलकानि सो जाहि निबाहन है सो निबाहो ।
मेरो तो माई उहै उर आनि रह्यो गड़ि गैयन को चरवाहो ॥

कबित्त ।

नैन नीको मृग को सुबैन नीको कोकिल को सैन नीको तीको गैन नीको बाज ताज को । चैन नीको ही को सुरैन अष्टमी को नीको ध्येन छन्द नीको दैन नीको नीको नाज को ॥ स्वैन

नीको गङ्ग को बजैन वेन ही को नीको ऐन नीको देव को सुपैन मैन साज को। दण्ड नीको दण्डि को घमण्ड गोड़ही को नीको खण्ड नीको भारत अखण्ड नीको राज को ॥ ६३ ॥

कारे घुघुरारे कच बिकच सकुच तजि नैन ये हमारे छवि छैल फाँस फँसिगो । उर बनमाल चारु चन्दन रुचिर भाल लोचन बिशाल भाल हेरि हिये धँसिगो ॥ कृष्णसिंह सांवरी सी मूरति मनोजमई निशि दिन हेरि हेरि अङ्ग अङ्ग रसिगो । कहो सब डंक दै न रहो कछु शंक अब मों मन मयंक में कलङ्क कान्ह बसिगो ॥ ६४ ॥

सवैया ।

धनि हैं गे वे तात औ मात जयो जिन देह धरी सो घरी धनि हैं ।
धनि है दृग जेऊ तुम्हैं दरसै परसै कर तेऊ बड़े धनि हैं ॥
धनि है ज्यहि ठाकुर ग्राम बसो जहँ डोलो लली सो गली धनि हैं ।
धनि हैं धनि हैं धनि तेरो हितू ज्यहि की तू धनी सो धनी धनि है ॥

कबित्त ।

तूहीतो कहै री मनमोहन लखे मैं मनमोहन लखे को एको लच्छण लहोती तैं । वसिये गोबिन्द सुधि बुधि है सबै तो तोहिं दीन्हीं ना अजौ लौं लोक-लाजहिं चुनौती तै ॥ चङ्ग होतो चित्तरी कुरङ्गनैनी कैसे गन अङ्गनि अनङ्ग बारी अगिनि अ-गोती तै । बावरा भई है तै न सांवरी सखीह देखी सावरी सखीह देखि बावरी न होती तैं ॥ ६६ ॥

सवैया।

द्वारिया द्वार के पौरिया पौरि के पाहरू ये घर के घनश्याम हैं।
दास है दासी सखीन के सेवक पाय परोसिन के धनधाम है॥
श्रीपति कान्ह भैं नित भांवरे मानभरी सतभामा सी बाम है।
एक यही बिसराम थली वृषभान-लली के गली के गुलाम है॥

कवित्त।

मोही में रहत सदा मोहू ते उदास रहै सिखत न सीखहू सिखाये निरधार्‍यो है। चौको सो चको सो कहूं जक सो जको सो कै उपाय नथ को सो भांति भांति न निहार्‍यो है॥ ठाकुर कहत हित हासवारी बातन में जानत न हरि सों कहां धौ बोल हार्‍यो है। ऐसो चित्त चातुर सयान सावधान मेरो ऐरी इन आँखिन अजान करि डार्‍यो है॥ ६८॥

जौ लगि न कोऊ पीर लागति है आप उर तौ लगि पराई पीर कैसे पहिचानिहौ॥ जानत हौ न आजु लौं न लाग्यो नेह काहू सन जबै नेह लागिहै तो हितहू न मानिहौ॥ चतुर कबीश कहै मेरे कहिबे की बात नेकु ना रहैगी तू समुझि हिय ठानिहौ। जैसे तुम मोहिनी को लागत हौ प्यारे लाल वैसे तुम्है कोऊ नीक लागिहै तो जानिहौ॥ ६९॥

सवैया।

जो मिलि है तुम को तुमहूं सो कहूं कोउ तोसों जु पै हित मानिहौ।
बूझे ते और की और धुनैगो सुनैगो नहीं जिसकी जो बखानिहौ॥

ये सब मेरी कही शिवसागर तादिना ते तुम सांचु कै जानिहौ।
नेह सो देह दहैगी जब तबै प्यारे पराई व्यथा पहिचानिहौ॥

सोरठा।

प्रीति सु ऐसी जान, काँटे की सी तौल है।
तिलभरि चढ़ै गुमान, तौ मन सूई डग-मगै॥

दोहा।

चढ़ि कै मन तुरङ्ग पर चालिबो पावक माहिं।
प्रेम पन्थ ऐसो कठिन सब सों निबहत नाहिं॥

झूलना रामसहाय के—अलिफ़।

वह अलिफ इलाही एक है जी बहु भेष में आपु समाय रहा।
कहि डोलता है कहिं बोलता है कहि सुन्ता है कहिं गाय रहा॥
नहिँ और किसी से कहताहूं मैं अपना मन समुझाय रहा।
गुरु इश्क इसारा साहि दले वाहिद में रामसहाय रहा॥ १ ॥
वह अलिफ इलाही एक है जी जिन टेक धरी सोइ पार पड़ा।
कसि कमर करेजा हाथ लिया मैदान इश्क में आनि अड़ा॥
यह भेद समुझि कर सूली पर मन्सूर भी तूर बजाय चड़ा।
हद बेहद रामसहाय नही सिरहद में नेह निसान गडा॥ २ ॥
वह अलिफ इलाही एक है जी जिसे सेख बिरहि मन ध्यावता है।
कोई माला तसबी जपता है दै बांग कोई गुण गावता है॥
कोई जाय मनमारि मुराकिबे में कोई सून्य समाधि लगावता है।
हर हाल में रामसहाय वही इक रामरूप दरसावता है॥ ३ ॥

वह अलिफ इलाही एक है जो चहौ राम कहौ चहौ रब्ब कहौ।
चहौ काबा औ महजीद कहौ चहौ ठाकुर द्वाराधाम कहौ॥
चहौ कहौ कटोरा अमृत का चाहौ कौसल का नाम कहौ।
तुम रामसहाय मिटाय दुई मनमस्त रहौ हरिनाम कहौ॥ ४॥

वह अलिफ इलाही पाकजात आनन्द ब्रह्म अविनासी है।
भरिपूर खुलासा नूर वही नहिं दूर सबन के पासी है॥
नहि ऊचा नीचा कम ज्यादा ज्यों का त्यों सब घट बासी हैं।
तू रामसहाय न जाय कहीं वह काया काबा काशी है॥

बे-बरकत बारी ताला को सब कुदरत का सामान हुआ।
अबगत सो आतस आबहवा परतच्छ जिमी अस्मान हुआ॥
भइ सूरति मूरति रङ्ग बने हरएक में नाम निशान हुआ।
पहिचानि ले रामसहाय उसे जग जिस्म हुआ वह जान हुआ॥

ते-तरकस में ज्यों तीर भरे त्यों तन में स्वास सुमार कीजे।
यह खाली छोडना खूब नहीं निज नाम निसान को ताकि लीजे॥
इस दमही का सब दमदमा दम टूटे देह दीवार छीजे।
तेहि रामसहाय उपाय यही दिल देग में दम को दम दीजे॥

से-सेसावित्त सन्तोष सील साँचा सुभाव भरपूरों का।
सिर बेचि के मरने को डरना यह खास खवास अधूरों का॥
बेइश्क इबादत करना दिन भरना काम मजूरों का।
खुश रहना रामसहाय सदा मजबूत मता मन्सूरों का॥ ८॥

जीम-जाग जाग ऐ जी जाहिल बेहोश पड़ा क्यों सोता है।
इस तन पिंजरे में आनि फँसा तू किस जङ्गल का तोता है॥

जो अबकी औसर चूक गया सिर पीटि सदां सों रोता है।
कहु रामसहाई रामनाम क्यों उमर अकारथ खोता है॥ ९॥
हे—हाजिर रहियो हाकिम से जिसकी नगरी में रहता है।
इस जन्म जिमी के पट्टे में कुछ बाकी भी तू चहता है॥
जो फिरे हुये हैं हाकिम से उन गब्बर का गढ़ ढहता है।
जो सन्मुख रामसहाय सदा सो आदि अन्त सुख लहता है॥१०॥
खे—ख़ैर इसी में जानै दिल जो खालिक से खुशहाल रहै।
गुरुज्ञान गरीबी सिफत् सना दुनियां में सीधी चाल रहै॥
ना सोना चांदी माल रहै ना हीरा मोती लाल रहै।
तू रामसहाय बिचारि देखु आद्यन्त में एक अकाल रहै॥ ११॥
दाल—दम् आता अरु जाता है सो तो तेरा पैगामी है।
दो मीर मलायक की दस्तक तुझपर मौजूद मुदामी है॥
ऐसे पर भी कुछ गफलत् है तो आखिर को बदनामी है।
छिपि रहौगे रामसहाय कहां साहब तो अन्तर्य्यामी है॥ १२॥
जाल—जाहिर सरह शरीकर हो अरु बातिन में मजबूत रहो।
दिल डोर तोरि कर दुनियां की उस साहब से साबूत करो॥
इस तन तस्बी में दम दाना सूरति सनेह ले सूत करो।
गुरुमन्तर रामसहाय जपौ बासि भरम भयानक भूत करो॥१३॥
रे—राह चलौगे जीवर की ऊधर को यकदिन आओगे।
गर काम करोगे दोजक का तो भिस्त में क्यों कर जाओगे॥
जो बीज बबूर के बोओगे तो खुरमा क्यों कर खाओगे।
इन्साफ है रामसहाय यही अपना कीया फिर पाओगे॥ १४॥

जे—जारी कर उस बारी से जो माफ तेरी तकसीर करै।
या परमेश्वर की रीति नही जो आजिज को तार्जीर करै॥
है बन्दे नेवाज गरीबों का बहु जालिम् को जर्जीर करै।
साकिर रहु रामसहाय सदा जो चाहै सो रघुबीर करै॥ १५॥

सीन—सदा तेरा संसार नहीं जिस को कहता तू मेरा है।
फरजन्द फाँस जोरू ठगिनी घर भाठियारिन का डेरा है॥
तू मोह मवास में मात रहा बे समुझ काल ने घेरा है।
हुसियार हो रामसहाय सदां उठि लागु सबील सबेरा है॥१६॥

शीन—शौक तुझे शिव मिलनेका तो पीर क प्याला पिउ भाई।
करि दूरि तकब्बुर ख्याल खुदी तमकन्त तकल्लुफ दुनियाई॥
यह प्रेम का पन्थ दुहेला है ना अकिल चलै ना चतुराई।
मुरसिद की मेहर मुहब्बत से कुछ रामसहाय सनद पाई॥१७॥

स्वाद—सुलह राखु सतगुरु सेती तो काम तेरा सब जारी है।
तप तीरथ पूजा नेम धरम पर एक उसीला भारी है॥
परतीति करै सोइ पार पड़ै भव बूड़ै बे-अतिबारी है।
श्रीरामसहाय दया सतगुरु की सांची बात बिचारी है॥ १८॥

ज्वाद—जब्त कहां तिनके दिल को जिनने वहदत का जाम पिया।
जब शौक होय तो शरम कहां डर डारि गरेबां चाख किया॥
खुसियाल खुमारी ख्याल खुदी जगजाल से पैर निकार लिया।
सब अङ्गमे एकै रङ्ग रचै स्वइ रामसहाय सन्दा सुखिया॥ १९॥

तो—तैयारी करु बांधि कमर इस तन तीरथ का मेला कर।
घट भीतर तेरे ज्ञान गुरू तू चित अपने को चेला कर॥

गम सादी दुख सुख दुनियां के सो सहज स्वभाव न झेला कर।
मुरशिद की मेहर सहाय सदा बेभरम खलक में खेला कर ॥२०॥
जो-जिकिर करो तो फिकिर छुटै नहि इकदिन जालिम लूटैगा।
मैदान मौत में यार तेरा यह तन तिनका सा टूटैगा ॥
जो मालिक से रूगोस हुआ फिर किसका ह्वै कर छूटैगा।
सुख पैहो रामसहाय तभी जब भरम का भाँडा फूटैगा ॥ २१ ॥
ऐन—इश्क नहीं घर खाला का जो झप्सेती घुस जाओगे।
बिन पूछे याचे खोलि कमर आँगन में खाट बिछाओगे ॥
सिर काटि मनी को मैदाँ कर मुरशिद की ठोकर खाओगे।
तब रामसहाय मिटाय खुदी महबूब महल कहुँ पाओगे ॥२२ ॥
गैन—गौर किया कर बहुतेरा बिन भेदी भेद न पावेगा।
उस अमर नगर की गैब गली बिन पूछें क्योंकर जावेगा ॥
सिर पांय सेती उलझाय रहा बिन समुझ कौन समझावेगा।
तू रामसहाय बिना मुर्सिद पानी में भीति उठावेगा ॥ २३ ॥
फ़े—फुर्सत का है वक्त अभी उठि बैठो अपना काम करो।
इस मन मंजिल को तैं करके फिर खोलि कमर आराम करो ॥
आशक तो नाम धराय चुके इस नाम को मत बदनाम करो।
तुम रामसहाई राम जपौ सब और खियालैं खाम करो ॥ २४ ॥
काफ़—कौल किया था क्यों तुमने जो तुम को काम न करना था।
क्यों पेट में पट्टा लिक्खा था जो दाम दिरम नहिं भरना था ॥
फिर कफनी क्योंकर पहिनी थी जो जीवतही ना मरना था।
सब छोड़ के रामसहाय तुझे अब ध्यान धनी का धरना था ॥

छोटा काफ—करो सुगुल दिनरैन यही दिल अन्दर इश्क इलाही का ।
ईमान मुसल्लम मौला से मजहब छोडो गुमराही का ॥
इस हेत खेत में बीज बओ मत जोतो पैड़ा पाही का ।
सुख सोओ राममहाय सदा दुख मेटो आवा जाही का ॥ २६ ॥
गाफ़—गिरह भरम की छूट गई तब जी जगदीश न दूजा है ।
नेह नेमाज रु ज्ञान गुसुल परतीति प्रेम का पूजा है ॥
नहिं जाप ताप नहिं और आप नहिं परगट है नहिं गूजा है ।
श्रीरामसहाय दया सतगुरु का प्रेम पहेला बूझा है ॥ २६ ॥
लाम—लबालब जाम हुआ तब क्यों न होय यह छलक २ ।
खिलरही चांदनी चारि तरफ महबूब क जिलवा झलक २ ॥
असमान इश्क से घूम रहा अकसर जमीन है थलक थलक ।
दिल डूबि कै रामसहाय देखि दरिया मुहीत है हलक २ ॥२८॥
मीम—मस्त मजाख फकीरों का इसलाम कुफुर से न्यारा है ।
ह्यां दाल दुई को असर नहीं सब एक में एक पसारा है ॥
स्थावर जङ्गम औ जीव जन्तु जग भांति भांति गुलजारा है ।
आसक सहाय मन मुर्दों ने मजहब को मजहब मारा है ॥२९॥
नू—नूर जमीं असमान अग्नि वह नूर पौन औ पानी है ।
रवि चन्द नछत्रहिं नूर नूर सब माया नूर निसानी है ॥
जीव नूर औ सीव नूर निज नूर ज्योति निर्बानी है ।
देखो सहाय सूरति समाय सब सृष्टि नूर से सानी है ॥ ३० ॥
वाव—वही वही सव वही वही वह वारपार भरपूर रहा ।
शिरमध्य समस्त मरेज सदां इस नूर में चकनाचूर रहा ॥

गुरसेन सहूर से सूझि पड़ा बेबूझ बहुत दिन दूर रहा ।
पीवो सहाय सब मस्तोंने यह नगद नशा मंजूर रहा ॥ ३१ ॥

हे-हरजाई हर चारतरफ हरि एक में हरि जो प्यारा है ।
ह्यां होस के होस हवास खता अरु अकिल ने किया किनारा है ॥
चतुराई चौपट ज्ञानगुरू बिज्ञान खड्ग चौधारा है ।
देखो सहाय सूरति समाय हर हाल में लाल हमारा है ॥३२॥

लामअलिफ-लाम में अलिफ मिला अरु अलिफ लाम में लीन भया ।
तब कौन दूसरा हरफ कहै जब बुन्द में सिन्धु समाय गया ॥
है आदि सनातन रूप वही ताजा ताजे पर नित्त नया ।
सो सूझै रामसहाय तभी जब राम रूप की होय दया ॥ ३३ ॥

ये-याद रहा यह एक हरफ जो मूल मतालिब है अपना ।
पर पर कुरान के झगड़े में क्या मगज झुकाना औ खपना ॥
आशिक को ऐन इमान यही सामान सबौ सब को सपना ।
राममहाय सुरामरूप वहि जापक जाप वही जपना ॥ ३४ ॥

धनी धन्य पीर रोशन जमीर जिन सांचा सबक पढ़ाया है ।
मोहिं जानि मुब्तदी बालबुद्धि सब हरफों में समझाया है ॥
हौं कई बार भवसागर में सोते से गोता खाया है ।
अब रामसहाय दया सतगुरु का ठीक ठिकाना पाया है ॥ ३५ ॥

इति श्री अलिफनामा समाप्तम् ।

कवित्त पावस ।

कंचन के खम्भ तामे डोलत ललित डांड़ी डारे मखतूल तूल मणिन खटोलना । सूही सारी सोहे सिर सुन्दरी नवोढ़न के गावती मलारैं वारै कोकिल को बोलना ॥ जेवर जड़ाऊ ज्योति अङ्गन में डगमगे कहै शिवनाथ कबि जाको कछु मोल ना । झुकि झकि झूलन झुलावती चपलनैनी सावन में श्यामा श्याम झूलत हिंडोलना ॥ १ ॥

सवैया ।

चूनरी चोखी चुईसी परै रगचीर जरीन के पैन्हि उजेरे ।
गावै मलारन को चित चाय चलाय चितौनि के घाय घनेरे ॥
बैठी हिंडोरे कहै गुरदीन बिलोकि कै के न भये चित चेरे ।
झूलती झूलन हारी अजौ जिय में हिय में अँखियान में मेरे ॥

कबित्त ।

लागे अब धावन धुकारै दै दै बारिधर चावन समेत कीन्हों छावन सरग है । छूटै जलधारै तैसे चातृक पुकारैं लागी बिरह दवारै लियो कानन को मग है ॥ ससकि सलोनो कहै नैन जल पूरि पूरि शिवनाथ श्याम बिन सूनो सब जग है । प्यारे मन· भावन की सावन के आवन की औधि भई पावन की बावन को पग है ॥ ३ ॥

कज्जल कलित तन पलित बलित भीम तड़ित ललित हेम-हारे सुभ पथ के । गरजि तरजि बरसत जलमध्य भूमि भूधरन

मारे सविंयोग योग गथ के ॥ ऐसे में न कीजिये पयान परदेश प्राणप्यारी यों कहत फरकत मोती नथ के। सावन सघन घन घूमत गगन मानों झूमत मतङ्ग अवनीप मनमथ के ॥ ४ ॥

धौंरे धौरे धूमरे धुधारे धाये धराधर धरि कै धरनि अब लागे जल छंडै ये। कहैं गुरुदीन तापै बोलत कलापी पापी डोलत समीर करैं धीरज के खंडे ये ॥ कहां जाउं कैसी करौ कामों कहौ सुनै कौन लावत न जीहा तापै पपिहा प्रचंडै ये। अखिल ब्रह्मंडै तम मंडै ह्वै उदंडै घन घुमड़ि घमंडै बिन प्यारे तड़ि तडै ये ॥ ५ ॥

जुगनू जमाती कैधों बाती बारि खाती प्राण ढूंढत फिरत घाती मदन अराती है। झिल्ली झननाती मननाती है बिरह भेरी कोकिला कुजाती मदमाती अनखाती है ॥ घटा घननाती सननाती पौन शिवनाथ फनी फननाती ये लगत ताती छाती है। सावन की राती दुखदाती ना सोहाती मोर बोलै उतपाती इत पातिहू न आती है ॥ ६ ॥

धारे मेघवारे बेसुमारे घनकारे परैं जात न संभारे पैन धारे ज्यों दुधारे की। झिल्ली झनकारे बैन बोलै दुखदारे कान फोरत हमारे जीम चातकी गँवारे की ॥ सारे ब्रजवारे मन-मारे तन जारे अहो थकतु निहारे वाट यमुना किनारे की। बैजनाथ प्यारे बिन ब्याकुल बिचारे प्राण सुनते दुखारे धुनि बारिद नगारे की ॥ ७ ॥

बाजत नगारे मेघ ताल देत नदी नारे झींगुरन झांझ

भेरी भेकन बजाई है । कोकिल अलापचारी नीलकण्ठ नृत्यकारी पौन बीनधारी चाटी चातक लगाई है ॥ मनिमाल जुगनू ममारख तिमिर थार चौमुख चिराग चारु चपला जनाई है । बालम बिदेस नये दुख को जनम भयो पावस हमारे ल्याई विरह बधाई है ॥ ८ ॥

कोकिल के गावन की धुरवान धावन की बिज्जु चमकावन की पावन की परसनि । मदन सतावन की पीरी तन छावन की अवधि बितावन की नैनन की तरसनि ॥ शिवनाथ चावन की चित्त ललचावन की ऊभी हंस कावन की बिरह की झरसनि । प्रीतम के आवन की हँसि उर लावन की सुधि सरसावनि की सावन की बरसनि ॥ ९ ॥

फुही फुही बूंदे झरै बीर बारिबाहन तें कुहू कुहू सुनि परै कूक कोकिलान की । ताही समै श्यामा श्याम झूलत हिंडोरे चढ़ि वारौं छबि कोटिन मै रतिपंचवान की ॥ कुण्डल लकट सोहैं भृकुटी मटक मोहैं अटकी चटक पट पीत फहरान की । झूलति समै की सुधि भूलति न हूलति री उझकनि झुकनि झकोरनि भुजान की ॥ १० ॥

मोर को मुकुट शीशभाल खौरि केसरि की लोचन बिशाल लखि मन उमहत है । मैन कैसे केश अतिकुण्डल बखत बेस झलक कपोल लखि थिर ना रहत है ॥ कुलकानि धीरज मलाह मतवारे दोऊ मदन झकोर तन तीर ना गहत है । श्याम छबि सागर में नेह की लहर बीच लाज को जहाज आज बूड़न चहत है ॥ ११ ॥

सवैया ।

ध्यान मै ब्रह्म लखैं ते लखै मय मानि हिये भवसिन्धु गँभीर को।
मोहिं न आवत नाक नचाय कै रोकिबो छोडिबो प्राण समीर को ॥
कानन में मकराकृत कुण्डल खेलनहार कलिन्दी के तीर को।
भावत मोहि वहै हिय में नन्दगाँव को छोहरो नन्द अहीर को ॥

आन न शम्भु लख्यो परिहै परिहै कहुँ दीठि जो सांवरो आनन।
मान न बावरी लोग लगैगे जगैगे अली उपहास अमानन ॥
प्रानन को तजि दैहै अरी करिहै पुनि केसहू खान न पान न ।
कानन २ हीं फिरिहै जो कहूं मुरली-धुनि लागिहै कानन॥१३॥

लाज के लेप लगाय थके औ थके सब सीखि के मंत्र सुनाय कै।
गारुडी ह्वैकै थके सब लोग थके सब बासुकी सोहैं देवाय कै ॥
ऊधो सो कौन कहै रसखानि जो कानि न मानत येतो उपाय कै।
कारे बिसारे को चाहै उतारो अरे बिष बावरे राख लगाय कै ॥

जात नही महिमा रघुनाथ जो सेवरै मानै न देवधुनी को।
मोल घटै नहिं पांवरे पाय कै जो कोऊ देति है फेंकि चुनी को ॥
मैली परै महिमा न कछू जो हँसै कोऊ पातकी देखि मुनी को।
ठाकुर कूर करै जो निरादर तो नहिं लागत दोष गुनी को ॥

पण्डित पण्डित सों गुनमण्डित सायर सायर सों सुख मानै।
सन्तहिं सन्त भलन्त भले गुनवन्तन को गुनवन्त बखानै ॥
सूर को सूर सती को सती कहि दास यती को यती पहिचानै।
जाकर जासन हेत नहीं कहिये सो कहा त्यहि की गति जानै ॥

हाहा करौ विनती परि पांय गहौ जनि मेरो दुकूल दुवार मे ।

देखती हैं ए गली में अली न चली कछु मेरो कहा घरबार में ॥
नाथ जू ह्वैकै कलंक हमै तन भीजिहैं त्यों अँसुवान की धार में ।
येहो मुरारी सम्हारि कै काम करो जानि छूटै सँयोग बिहार में ॥

कुण्डलिया ।

थोरी जीवन जगत में आय रह्यो कलिकाल ।
तामहँ दुष्ट दरिद्र यह दाहत दीनदयाल ॥
दाहत दीनदयाल रात दिन सोचत बीतै ।
सो कस सहै कलेस पाइकै सुरतरु मीतै ॥
करि पुकार हरदत्त अहै सरणागति तोरी ।
बिरद करो सम्भार नाथ ज्यहि होत न थोरी ॥ १८ ॥

झूलना ।

आशक होना सहल नही मरने से मुशकिल मानोगे ।
पल पल पर जीना मरना है तिस को क्योंकर पाहिचानोगे ॥
चीज चमत्कारी न चलै तहँ हाय हमेशै ठानोगे ।
श्रीयुगल अनन्य शरण आशक रस छानत २ छानोगे ॥
मुसकान चपल चितवनि अमोल मृदुबोल लोल चित चाहै ।
पीतबसन बनमाल लटक छवि जाल चाल अवगाहै ॥
चारुचिबुक बरबिन्दु इन्दु मनमोहन अकथ कथा है ।
श्रीयुगल अनन्य शरण कुंडल कल डोलनि हिया हरा है ॥

दोहा ।

नाम रटन निज नीचप्रण अगुण अधन सत्कार ।
श्रीयुगल अनन्य शरण किये पाये प्रभु दीदार ॥ २१ ॥

ज्ञान दोहावली दोहा ।

माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर ।
सब प्रभुता को पद गन्यो ढब्यो अरज पग नेर ॥ १ ॥
रन बन व्याधि विपत्तिमों बृथा डरै जनि कोय ।
जो रक्षक जननी-जठर सो हरि गयो न सोय ॥ २ ॥
मनुज बिबिध भेषज करत व्याधि न छाड़त साथ ।
खग मृग बसत अरोग्य बन हरि अनाथ के नाथ ॥ ३ ॥
जो जाके बस में परै तासों कहा बसाय ।
ताको सुख दुख देत मों ईश्वर एक सहाय ॥ ४ ॥
बात बहत रवि तपत घन बरषत तरु फल हेतु ।
इच्छा ते ज्यहि ईश की करहु ताहिते हेतु ॥ ५ ॥
जाकी रक्षा जाहिबिधि हरि तैसी मति देत ।
दै चपेट बड़ बालकहिं लघुहिं गोद सब लेत ॥ ६ ॥
हरिइच्छा कहुँ दोप गुन गुनो दोष कहुँ होय ।
अगिनिदाह जिमि सरपतहिँ जिमि जवास घन तोय ॥७॥
परत प्रतीति न ईश मों ऐसिहु गति लखि सूध ।
मलपूरित तन बीच सों जो बिलगावत दूध ॥ ८ ॥
स्वारथ अरु परमारथहुँ तजत न लागत लाज ।
चोर होत हरि ओर उत इत निज करत अकाज ॥ ९ ॥
जेहिबिधि जासु निबाह हरि दीन बन्धु तस कीन ।
जलचारन जलखग कियो इतर कुटिलकरि दीन ॥ १० ॥
निज निज लायक लोकहित सकल कीन भगवान ।

दालि नाम द्विदल सकल रची एक दल आन ॥ ११ ॥
वरषा बरषत आग मों तपत शिशिर जटिआय।
दैवहु की गति एक नहिं नर की काह बसाय ॥ १२ ॥
कहत धरम आगे करब काल न देखत कोय।
बचे कूप खनि घर जरत परत धार बनबोय ॥ १३ ॥

कालगति।

काल आय जैसा परै तैसी मति सब होय।
लागे फागुन मास ज्यों लाज तजैं सब कोय ॥ १४ ॥
कालपाय कछु नहिं रहै कीन्हे कोटि उपाय।
पाकि साइ नित सींचिये तबहू जाय सुखाय ॥ १५ ॥
जनम मरण धन निधन मों काहू की न बसात।
होत जात सब काल बश जस तरुवर में पात ॥ १६ ॥
धन यौबन बिभुता बिपति जानि परत है धीर।
समय साथही जात है जिमि भादों को नीर ॥ १७ ॥
कालपाय सुख होत है नहिं कछु किये उपाय।
कोकिल बिचरत बन सदा हरषत ऋतुपति पाय ॥ १८ ॥
गिरि समुद्र छिति देवता अवसर पाय नसात।
मनुज देह जल फेन सम बृथा ताहि पछितात ॥ १९ ॥
धनपति नरपति देवपति स्वप्न समै जिमि होय।
झूठ होत जागे सकल जगसुख जानहु सोय ॥ २० ॥
मंत्र यत्र भैषज किये काल जीति जो जात।
बड़े २ समरथ भये काह कोउ मरि जात ॥ २१ ॥

दानगति ।

दान देत धन होत है संचित जात नसाय ।
सरिता बहै भरी रहै थिर सर जात नसाय ॥ २२ ॥
एक दिहे बहु मिलत है दान लाभ को मूल ।
मलिन पत्र दै तरु लहै नवपल्लव फल फूल ॥ २३ ॥
बलि दधीचि शिवि करन की कीरति सुनि सुनि कान ।
तृण समान मन दान मों धन को काह प्रमान ॥ २४ ॥
दान देत धन घटत नहिं नहिं पावत अधिकात ।
पश्चिम जल सूखै नहीं नहिं पूरब सरसात ॥ २५ ॥
खान दान तजि धन धरै परै हरै निजु तौन ।
मधुमाखी आंखो लखी साखी भाखी कौन ॥ २६ ॥
निजहित परहित दान ते संचै युगल नसाय ।
क्षणभंगुर तन धन धरत परत न खनहिं लखाय ॥२७ ॥
मान सहित निज वित्तसम तुरत दान जिन दीन ।
सेवा बिन तिनकौं कविन दाता वरणन कीन ॥ २८ ॥
मान बड़ो करि दान लघु तुरत देय जो कोय ।
बिन सेवा उपकार ते उत्तम दाता सोय ॥ २९ ॥
बहुत दान अरु मान लघु बहुदिन मों जिन कीन ।
मध्यम दाता ताहि को सकल कविन कहि दीन ॥ ३० ॥
थोर दान सन्मान लघु सेवा कछुक कराय ।
करै अधम दाता तिन्है भाषत बुध समुदाय ॥ ३१ ॥

कर्म्मगति।

कर्महेतु हरि तन दियो ताते कीजै काज।
दैव थापि आलस करै ताको होइ अकाज॥ ३२॥
कैसो होय समर्थ कोउ बिनु उद्यम थकि जाय।
निकट असन बिनु कर चले कहु किमि सुख मों जाय॥
कीन्हें बिना उपाय कछु दैव कबहुँ नहिं देत।
जोति बीज बोवै नही किमि कर जामे खेत॥ ३४॥
कर्म करत फल होत है जो मन राखै धीर।
श्रम कै खोदत कूप ज्यों थल मों प्रगटत नीर॥ ३५॥
झूठ होत जो कर्मफल यह बिचारु मनमाहिं।
दुखी सुखी भल पोच सब एकरङ्ग कस नाहिं॥ ३६॥
आपु करै अपराध तो का पर सों बिरुझाहि।
जीभि कटै निज दन्त ते कोह करै कहु काहि॥ ३६।

स्वभाव गति।

कैसो परै कुसङ्ग जो तजहि न सुजन सुभाय।
तीनि टेढ़ कोदण्ड ते तीर सीधि गति जाय॥ ३८॥
सूध सूध ते सँग चलै साधु कुटिल ते नाहिं।
सदा बसहिं सर सर सँगै धनुष पड़त उड़ि जाहिं॥३९॥
सम रसाल तरु अरु सुजन खल बबूर इक बांट।
ताड़तहूं वै देहिं फल सेवतहूं वै कांँट॥ ४०॥
बर अचूक सर सों हनै कहै न कोउ कटु बात।
यामें छन दुख होत है वामें नित अधिकात॥ ४१॥

अधन चहत शत धन उतो सहस सों लछि नृप सोय।
सो सुरेस सो बिधि सो हरि सो हर तुषित न कोय ॥४२॥
निज सुभाय छूटै नही कीन्हें कोटि उपाय।
स्वान पूंछ सीधी करै फेरि कुटिल ह्वै जाय ॥ ४३ ॥
एक नखत दिन लगन कुल तिथि मों उपजे साच।
नहिं समान सब रूप गुण जिमि कर अङ्गुलि पांच ॥४४॥
शिशिर दुःख दिन दूबरो सोइ ग्रीषम सरसात।
ताप करत चर अचर को बढ़े सबै इतरात ॥ ४५ ॥
बड़ी निशा हिमि दुख करै सोइ ग्रीषम कृश होय।
ताप हरत हैं जगत को बिपति साधु सब कोय ॥ ४६ ॥
बीना बानी नारि नर विद्या है हथियार।
पुरुष मिलै जैसो इन्है तैसी लहै असार ॥ ४७ ॥
जौ न होय कछु बुद्धि तौ पढ़ब गुनब केहि काम।
पढो कीर मतिहीन ज्यों लै टेरत निज नाम ॥ ४८ ॥
आग भाग ते ऊख मों पोर पोर रस जोर।
सुजनन प्रीती नींचें मों गनब नींच ते ओर ॥ ४९ ॥
को समरथ फिरि थिर करै प्रेम अनादर भङ्ग।
गजमुक्ता फूटो जुरे काह लाह के रङ्ग ॥ ५० ॥
सुंजन सोन अति अवचटे टूटहिं जुरहिं तुरन्त।
खल माटी के घट सहज फूटहिं जुरहिं न अन्त ॥ ५१ ॥
खल फल पाके दारुणी भीतर केर मलीन।
उपर खार अन्तर मधुर सुजन पनश कहि दीन ॥ ५२ ॥

हेतु होत दूरहु निकट निकट दूर बिन हेतु।
लोचन लोचत निज चरन करन दीठि नहिं देतु ॥ ५३ ॥

निरदोषी संकित सदा दोषी हिये न हानि।
बदन छुपावति कुलबधू बिश्वा चलति उतानि ॥ ५४ ॥

जाहि परै जानै सोई प्रीति करत नित भीति।
ताप होत बिछुड़ेहु मिले इहै बडी अनरीति ॥ ५५ ॥

खल जन बिनु काजहुं परे अवगुण करैं बिचारि।
सर सरिता यद्यपि भरे काग पिअहिं घटवारि ॥ ५६ ॥

नीतिगति।

कलह कण्डु मद द्यूत रति अशन शयन परनारि।
बैर प्रीति ये दश बढ़ै सेवा की अनुहारि ॥ ५६ ॥

देश-अटन बुध मित्रता बारनारि सों प्रीति।
शास्त्रश्रवण नृप-सभागति पाँच चतुरता नीति ॥ ५८ ॥

खाय खवावै देय कछु लेय कछुक लखि रीति।
गुप्त बात पूछैं कहैं षट लक्षण हैं प्रीति ॥ ५९ ॥

काज लागि सुजनौ करहिं खलहू केर सुपास।
सींचत खार गुलाब के कुसुम बास की आस ॥ ६० ॥

खलजन के संग्रह बिना कहुँ अकाज ह्वै जाय।
जौ न कांट संचै करै खरौ खेत चरि जाय ॥ ६१ ॥

निज करनी बिनु मनुज को वृथा जन्म तनरूप।
जिमि अजगल थन गज दशन स्वान पूछ शिशुभूप ॥ ६२ ॥

शान्ति-वचन सुनि कुपित जन कोप करहिं अधिकाय।
अति तोपित घृत तेल ज्यों बारि परत जरिजाय॥ ६४ ॥
सुजन-बचन अरु गज-दशन निकरि फेरि पैठै न।
बार बार उगिलत गिलत कमठ कण्ठ शठ बैन॥ ६४ ॥
देवा मेवा सुजन-जन सेवा से फल देत।
लखत कन्द तरु मन्द नरु इन्है खने कछु लेत॥ ६५ ॥
अगिनि-दाह अति दुख नहीं नहिं दुख अति घनघाय।
गुंजा के सँग तोलिबो सो दुख सहो न जाय ॥ ६६ ॥
काज सरे नहिं और को काह करै बलशील।
बिलगावत शिकता सिता मिले पिपील न पील॥ ६७ ॥
काह करै बहुरूप गुण जासों मन नहिं लीन।
राखै मधु घृत दूध मों जल बिनु मनि मलीन॥ ६८ ॥
देश मोह रुज अलस भय तिय सेवा सन्तोष।
सहजहि मिलैं महत्व जो ये न होंहिं षट दोष॥ ६९ ॥
गुण अवगुण तस लखि परै जस जासो मन लीन।
कमल मुदित रवि तापहू निरखि सुधाकर दीन॥ ७० ॥
पुत्र चीन्हिये बृद्धई दुरदिन परे कलित्र।
काज परे सब को लखिय बिपति चीन्हिये मित्र॥ ७१ ॥
एक एक अक्षर पढ़ै एक एक तजि देय।
आदिहि दोहा नाम कुल देश ग्राम लखि लेय॥ ७२ ॥
सम्वत् एक सहस सहित नौसै तीनि समेत।
रची ज्ञानदोहावली चैत पंचमी श्वेत॥ ७३ ॥

इति ज्ञानदोहावली समाप्ता।

दोहा ।

कागा सब तन खाइयो चुनि चुनि खैयो मास ।
ये नैना जनि खाइयो पिया मिलन की आस ॥ १ ॥
अली मान तजि सेइये हिलि मिलि प्यारो कन्त ।
सब जग मनभायो भयो हाकिम नया बसन्त ॥ २ ॥
बल्लभ बल्ली प्रेम की तिल तिल चढै सभाय ।
ज्वाल जाल ते नहिं जरै कपट लपट जरिजाय ॥ ३ ॥
मीन काटि जल धोइये खाये अधिक पियास ।
तुलसी ऐसी प्रीति है मुयहु मीत की आस ॥ ४ ॥
तुलसी जप तप नेम ब्रत सब सबहीं ते होय ।
नेह निबाहन एक रस जानत बिरलै कोय ॥ ५ ॥

इति कविवचनसुधा समाप्ता ॥

